"श्रीलंका में आई. पी. के. एफ. (शान्ति सेना) की गतिविधियां राष्ट्रपति जो प्रमुख कमांडर हैं, की कार्यकारी शक्तियों द्वारा शासित होती हैं।"

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अब आगे कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू अपना स्थान ग्रहण करें। माननीय प्रधान मन्त्री।

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू अपना स्थान ग्रहण करें। काफी हो गया। इसे कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। आपको बोलने की मेरी अनुमति नहीं है।

प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी) : अध्यक्ष महोदय, इस वाद-विवाद को लाने के लिए सर्वप्रथम मुझे विपक्ष का धन्यवाद करना आवश्यक है। इससे बहुत उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति हुई है। कल दोपहर से आज तक हमने केवल विपक्ष के विचारों का खोखलापन देखा है। (व्यवधान) वे अब भी वही चीज प्रदर्शन कर रहे हैं (व्यवधान) उनके सोचने का खोखलापन, विचारों का खोखलापन और शायद सबसे महत्वपूर्ण है उनके दृष्टिकोण का पूर्ण खोखलापन उनके पास कुछ तुच्छ व्यक्तिगत हमले करने के सिवाए कहने को कुछ नहीं है और यदि केवल इतना ही है तो मैं इसके लिए उनका आभारी हूं।

माननीय सदस्य जिन्होंने यह वाद-विवाद शुरू किया—उनकी प्रथम शिकायत सरकार और मेरे विरुद्ध यह थी कि मैं विपक्ष की मदद और सहायता नहीं कर रहा हूं। महोदय, मैं आपसे क्षमा चाहूंगा क्योंकि यह स्पष्ट है कि उन्हें हमारी मदद और सहायता की आवश्यकता है, अन्यथा वे हमेशा इस स्तर तक आते रहेंगे।

कुछ सदस्यों ने मध्यावधि चुनाव की मांग की है और हमें चुनाव कराने को कहा है। मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहूंगा यह सरकार पांच वर्षों के लिए चुनी गई है, यह सरकार पांच वर्ष तक रहेगी। हम सड़कों पर जुलूसों, गुप्त सभाओं, योजनाजन्य अभियानों अथवा षड़यन्त्रों से विचलित नहीं होते हैं। जी नहीं। और यदि रैलियां आयोजित करने का प्रश्न है, हम भी थोड़े समय में जब चाहें तब बड़ी रैलियां आयोजित कर सकते हैं।

(व्यवधान)

वास्तव में, मैं इस सभा के कुछ सदस्यों को यह बताना चाहूंगा कि लोकदल द्वारा कुछ समय पहले आयोजित की गई रैली भाकपा तथा माकपा द्वारा आयोजित की गई रैली से कहीं अधिक बड़ी थी।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : कहां ?

श्री राजीव गांधी : नई दिल्ली में।

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : क्या आपका अभिप्राय नानी रैली से है। (**व्यवधान**) एक नानी रैली हुई थी। (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : मैंने कांग्रेस नहीं, लोकदल कहा है। अतः, पहले आप अपनी समस्याओं को सुलझा लें।

महोदय, पिछले चुनावों से अब तक लोकसभा के 19 उपचुनाव हुए हैं। हमने इन 19 उपचुनावों में से 13 उपचुनाव जीते हैं। यदि आप चाहें, तो मैं उनकी राज्य तथा चुनाव क्षेत्रवार सूची प्रस्तुत कर सकता हूं। उनमें जनता पार्टी ने 2, माकपा ने 1, एस. एस. पी. ने 1 तथा लोकदल ने 2 उपचुनाव जीते। किन्तु मुझे याद है कि बाद में एक सदस्य ने उनको छोड़ दिया है।

(**व्यवधान**)

इस प्रकार यह कहना पूरी तरह गलत है कि इस सरकार ने लोगों का विश्वास खो दिया है। लोगों ने हमें उसी अनुपात तथा परिमाण में समर्थन दिया है जिस अनुपात तथा परिमाण में यह सभा प्रतिनिधित्व करती है। इसीलिए मैंने श्री सोमनाथ चटर्जी द्वारा इस सभा में दिए गए वक्तव्य पर कड़ी आपत्ति की जब उन्होंने इस देश की समस्त जनता का अपमान किया तथा सभा को उनसे क्षमायाचना की मांग करनी चाहिए। श्री सोमनाथ चटर्जी ने कहा है कि इस सभा के लगभग 80 प्रतिशत सदस्य कालाबाजारियों तथा 'फेरा' के अपराधियों द्वारा चुने गये हैं। (**व्यवधान**)

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने कब तथा कहां ऐसा कहा है? मैंने यह कभी नहीं कहा है।

(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : क्या आपने यह नहीं कहा है कि कांग्रेस के चुनाव-क्षेत्र कालाबाजारियों तथा 'फेरा' के अपराधियों के चुनाव-क्षेत्र हैं?

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपके विधि मंत्री द्वारा न्याय पालिका के बारे में जो कहा गया उस सम्बन्ध में मैंने यह कहा है। आप न्याय पालिका के लिए सरकार को प्रतिस्थापित करते हैं।(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : नहीं, वह एक अलग मुद्दा है। यह बड़े शर्म की बात है कि माननीय सदस्य इस ढंग से भारत की जनता का अपमान करते हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्हें पढ़ने दो। (**व्यवधान**)

श्री एस० जयपाल रेड्डी : उन्हें यह पढ़ने दो। वे सभा में नहीं रहे हैं।

(**व्यवधान**)

श्री वसुदेव आचार्य : आप सभा में नहीं थे।

श्री राजीव गांधी : यदि वे उत्तर देना चाहते हैं, तो उनको उत्तर देने दें।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने जो कहा है, उसको वे जानबूझ कर गलत रूप से उद्धरित कर रहे हैं। मेरे भाषण में यह वाक्य कहां है? (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : यदि वे चाहते हैं तो उन्हें अपना व्यक्तिगत स्पष्टीकरण बाद में दे देने दें··· (**व्यवधान**) मैंने जो कहा है, मैं उस पर दृढ़ हूं। माननीय सदस्य को व्यक्तिगत स्पष्टीकरण देने दो।

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्हें मेरे भाषण में वह वाक्य प्रस्तुत करने दें। (**व्यवधान**)

श्री एस० जयपाल रेड्डी : आपने जो कहा है, वह गलत है। क्या आप सभा से क्षमायाचना करेंगे ?

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने कहा है कि विभिन्न चुनावों ने यह प्रदर्शित कर दिया है कि यह सभा किसी प्रकार से भी बाहरी व्यक्तियों के दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। मैंने यही कहा है।

(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : प्रस्ताव के प्रारम्भ में तथा प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय श्री माधव रेड्डी ने जिस ढंग से अपनी दलीलें प्रस्तुत कीं, वे खेदपूर्वक थीं। 1985, 1986, तथा 87 में भी हमारी सरकार के बारे में उनकी उच्च धारणाओं के लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं। जैसा कि मैंने कहा है कि विपक्ष की सहायता करना मेरी जिम्मेवारी नहीं है। निश्चय ही, स्वतन्त्रता प्राप्ति के चालीस वर्ष के बाद वे अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए काफी अनुभवी हैं। (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : यह लगभग ऐसा है, जैसे श्री माधव रेड्डी जी विपक्ष की सहायता हेतु हमारी सहायता के लिए प्रार्थना कर रहे हों।

(**व्यवधान**)

जिन दो प्रधान मंत्रियों का जिक्र करना वे अभिवचनपूर्ण अनुरोध भूल गए वे दोनों गैर कांग्रेसी थे। अतः, स्पष्टतया, देश भर में कांग्रेस प्रधान मंत्रियों के बारे में धारणा बनी है अन्य के बारे में नहीं। उन्होंने दोष लगाया है। उन्होंने हम पर टकराव की राजनीति अपनाने का दोष लगाया है। कान्कलेवों की शुरुआत किसने की ? जनादेश को रद्द करने का प्रयास किसने किया ? (**व्यवधान**)

श्री सी० माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : क्या कान्क्लेव आयोजित करना टकराव है ?

[**हिन्दी**]

श्री राजीव गांधी : बैठ जाओ न, मौका मिलेगा इसके बाद।

[**अनुवाद**]

राष्ट्रीय महत्व के मामलों पर सरकार के साथ सहयोग देने से किसने इन्कार किया ? विपक्ष के लिए मेरे द्वारा बुलाई बैठकों में आने से किसने इन्कार किया ? क्या आप चाहते हैं कि मैं तारीख बताऊं ? यह सहयोग की राजनीति है या विरोध की ? फरवरी 1956 में परामर्श के लिए बुलाई बैठक का आपने बहिष्कार किया क्योंकि आपका कहना था कि यह एक 'अनौपचारिकता' है।

श्री बसुदेव आचार्य : अवश्य ही।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : वे बैठकें अनौपचारिकता हैं।

श्री राजीव गांधी : सच्चाई यह है कि ये बैठक (व्यवधान) महोदय मैं सभा में इस पर बहस नहीं करना चाहता। सच्चाई है कि बैठकों से सरकार और विपक्ष के बीच तनाव दूर करने के लिए थीं और विपक्ष ने इसे पसन्द नहीं किया। क्योंकि तब उन्होंने सभा में बहस करने में कठिनाई महसूस होती। और उन्होंने ऐसा मेरे संसदीय कार्य मन्त्री से कहा है।

[श्री राजीव गांधी]

सामान्य चर्चा के लिए मैंने नवम्बर 1986 में एक और बैठक बुलाई थी, आप फिर भी नहीं आए मैंने बोफोर्स पर चर्चा के लिए अगस्त 1987 में, बैठक बुलाई थी, आप फिर नहीं आये। इसलिए विरोध किस तरफ से है और परामर्श करने की कौन कह रहा है ? बात यह है कि जब भी मैंने विपक्ष को निर्णय की प्रक्रिया में शामिल करने की कोशिश की वे उससे भागे। उन्होंने बैठकों में आने और निर्णय में शामिल होने से इन्कार किया। और जब वे आये उन्होंने अपनी बातों को संक्षिप्त तथा निर्णायक रूप में नहीं कहा और बैठक को बिना निर्णय के खत्म कर दिया।

और मैं ऐसा विशेष विषय पर विशेष बैठकों के बारे में कह सकता हूं—मैं इसका उल्लेख उन बैठकों के बारे में कर सकता हूं जिसमें अनेक विषयों को शामिल किया गया था। सच्चाई यह है कि हमने विपक्ष को शामिल करने की कोशिश की है लेकिन वे शामिल होना नहीं चाहते क्योंकि वे अनियमिक रहे और वे सच्चाई का भाषण नहीं करना चाहते। यह मामले की सच्चाई है।

माननीय सदस्य ने जो ठीक मुझसे पहले बोले हैं, फेयरफैक्स के बारे में कुछ कहा है, और मैंने ध्यान दिया कि वे एक टाइप मामला पढ़ रहे थे। शायद उनका भाषण टाइप किया···

श्री एन० वी० एन० सोमू : यह हाथ से लिखा भाषण है आप इसे देखिए।

श्री राजीव गांधी : मुझे माफ कीजिए, यह हस्तलिखित भाषण है (**व्यवधान**)

मैं अपनी गलती मानता हूं। यह एक हाथ से लिखा भाषण है। लेकिन मेरे विचार से वह भाषण निश्चिततः ठक्कर नरराजन आयोग के रिपोर्ट प्रस्तुत करने के पहले लिखा गया है। क्योंकि यदि उन्होंने रिपोर्ट पढ़ी है तो वे देखेंगे कि उसमें सरकार को पूर्णतया उचित ठहराया गया है और यह विपक्ष··· (**व्यवधान**)

श्री एस० जयपाल रेड्डी : आपने कोई निर्णय नहीं लिया।

श्री राजीव गांधी : और यह विपक्ष ही है और उनके मित्र जिन्हें उस रिपोर्ट में पूर्णतया दोषी ठहराया गया है। पिछले सत्र में हर बात को विपक्ष ने कही···

श्री बसुदेव आचार्य : आपका विचार छुपाने का है।

श्री राजीव गांधी : रिपोर्ट में कोई छुपाने वाली बात नहीं है। यह पूर्णतया स्पष्ट है कि राष्ट्र को भ्रमित करने में विपक्ष पूर्णतया शामिल है। प्रतिवेदन में कहा गया है कि सी. आई. ए. के कर्मचारी अथवा पूर्व कर्मचारी सरकार की जांच में शामिल थे। इसके लिए किसने किया ? आप लोग छः महीने पहले आपलोग इसका समर्थन कर रहे थे। अब क्या हुआ ?

श्री इन्द्रजीत गुप्त : श्री ब्रह्मदत्त ने यहां क्या कहा है ?

श्री राजीव गांधी : ठक्कर नटराजन आयोग ने हर मुद्दे पर विचार किया है।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : हम संसद सदस्यों की एक समिति चाहते थे···(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : नहीं, महोदय, उस चर्चा में एक न्यायिक जांच की मांग की गई थी और हमने उस मांग को स्वीकारा।

श्री बसुदेव आचार्य : नहीं।

श्री राजीव गांधी : हो सकता है यह आपकी व्यक्तिगत मांग न हो। हमने बोफोर्स का जांच कार्य संसद सदस्यों की एक समिति को सौंपा है। आप उस वक्त कहां थे? बात यह है कि आप सच्चाई जानना नहीं चाहते हैं, आप सिर्फ हल्ला करना जानते हैं।

अब बात यह है कि सारा देश आपका अभिप्राय जानता है सारा देश उस खतरे को जानता है जिसे इस जांच ने खोल दिया और सारा देश जानता है कि राष्ट्र के दुश्मन कौन हैं और उन्हें कौन सहयोग दे रहा है। इसे प्रक्रियात्मक या दूसरे तर्कों से छुपाया नहीं जा सकता है। यह न्याय पालिका को दबाने में मददगार नहीं होगा।

श्री बसुदेव आचार्य : आप जनता के पास जाएं।

श्री राजीव गांधी : हमें जनता के पास जाने की आवश्यकता नहीं हैं जब वे हमारे साथ ही हैं। जनता आपके साथ नहीं है। इसलिए आप उनके पास जाएं। और यह जो शर्मनाक दोहरी नीति आपने दिखाई है, सारे देश को शर्मिन्दगी में डालने वाली बात है···(**व्यवधान**)

महोदय, चर्चा से पता चलता है कि वैचारिक मुद्दे पर भी विपक्ष में बहुत कम मतभेद है, परम्परा यह है दूसरी ओर बैठे दक्षिणपन्थी दलों का यह सुस्थापित अधिकार है कि उनके विचार और सिद्धांत और दृष्टिकोण में एक शून्य आ जाए। परन्तु आज मैं यह देख रहा हूं कि उनमें वामपंथी शामिल हो गए हैं···

श्री संफुद्दीन चौधरी (कटवा) : आप चिंतित हैं।

श्री राजीव गांधी : बेशक, मैं चिन्तित हूं क्योंकि मैं एक अच्छा विपक्ष चाहता हूं और जो मुझे नहीं मिल रहा है। यही बात मुझे चिन्तित किए है···(**व्यवधान**) मैं एक ऐसा विपक्ष चाहता हूं जो सदन पर टिके और नीतियों पर बहस कर सके जो राष्ट्र के भविष्य के बारे में बहस कर सके। वैसा विपक्ष जो व्यक्तिगत समस्याओं में जुड़ा है राष्ट्र को सहायता नहीं कर सकता है। और मैं अभी भी आप से अनुरोध करूंगा—ऐसा मैंने खुले आम कहा है, ऐसा मैंने आम सभाओं में कहा है, ऐसा मैंने प्रेस कान्फ्रेंसों में भी कहा है—कि मैं एक मजबूत विपक्ष का स्वागत करूंगा। मैं ऐसे विपक्ष का स्वागत करूंगा जिसका सिद्धान्त और मूल्य हो वैसे विपक्ष का नहीं जिसने कल और आज की तरह चर्चा की।

जबकि पूरे विश्व की नजर रूस और चीन में हो रहे परिवर्तनों की ओर है विपक्ष नये विचारों के उत्पन्न होने का इन्तजार ही कर रहे हैं। हमारे वामपंथी दल पुराने छाप में ही फंसे पड़े हैं। (**व्यवधान**)।···मैं सम्मान सहित अपने वामपंथी मित्रों के लाभ के लिए, मैं किसी व्यक्ति के बात का उल्लेख करना चाहूंगा, वे इसकी प्रशंसा करेंगे। वे नाम का अनुमान लगा सकते हैं। उदाहरण यह है —

> "नये कार्यों को हल तैयार उत्तरों से नही करना है, न ही वैसे उत्तर अभी उपलब्ध हैं। समाज शास्त्रियों ने अभी तक क्रियाशील नहीं दिया है। समाजवाद की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पुराने विचारों से जकड़ी है और किसी भी मामले में जीवन के तर्क से मेल नहीं खाती।" शायद इससे उनकी आंखें खुल जाएंगी।

(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : मैं अपने मन्त्री से अनुरोध करूंगा कि वे उन्हें नवोदय विद्यालय में प्रवेश दे दें शायद वे वहां सीख लेंगे।

संचार मन्त्री (श्री अर्जुन सिंह) : महोदय आपने दक्षिणपंथी और वामपंथी का तो जिक्र किया है परन्तु आपने उनका जिक्र नहीं किया है जो न तो वामपंथी है और न ही दक्षिणपंथी। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी : तथ्य यह है कि हर जगह परिवर्तन हो रहा है। यहां बहुराष्ट्रिकों के बारे में काफी कुछ कहा गया है। हमें स्थिति को स्पष्ट करना चाहिए। बहुराष्ट्रकों के बारे में बे-सिर-पैर का भाषण जारी रहा परन्तु सोवियत रूस तथा चीन में बहुराष्ट्रकों के साथ क्या हो रहा है? क्या वे समाजवादी राष्ट्र नहीं हैं? क्या वे उन देशों में समाजवाद से वंचित हैं?···**(व्यवधान)** घर के पास। पश्चिमी बंगाल में बहुराष्ट्रकों के साथ क्या हो रहा है? स्पष्ट रूप से इस, सभा में बैठे हमारे मित्र बाहर विश्व में जो कुछ हो रहा है उससे पूर्णतया अनभिज्ञ हैं आपको दूर नहीं जाना है। आपको चीन में नहीं जाना है; आपको रूस में नहीं जाना है परन्तु कम से पश्चिमी बंगाल को देख तो लीजिए। पश्चिमी बंगाल के मुख्य मन्त्री से पूछिए कि वे क्या सोचते हैं और वे इस दिशा में क्यों जा रहे हैं? **(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : यह सब आपके कारण है आप जान-बूझ कर पश्चिम बंगाल के साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं। आप चाहते हैं कि पश्चिम बंगाल एक औद्योगिक रेगिस्तान बन जाए। आप इस देश के बारे में कुछ नहीं जानते। वह जान बूझ कर गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं। वह सोचते हैं कि वह भारत के सम्राट हैं। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी : मैं इस बात की काफी सराहना करता हूं। मैं माननीय सदस्य का उनकी टिप्पणियों के लिए धन्यवाद देता हूं। मैं इस बात की काफी सराहना करता हूं कि पश्चिमी बंगाल के मुख्य मन्त्री को इस बात का पता है कि सी० पी० एम० की नीतियां पश्चिमी बंगाल में प्रगति नहीं ला पाई। उन्हें यहां से कांग्रेस की नीतियों तथा नेतृत्व की ओर देखना पड़ता है। धन्यवाद महोदय।

(व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : दुर्भाग्यवश, वे भारत के प्रधान मन्त्री हैं। हम उनकी अवहेलना नहीं कर सकते हैं यहां जो कुछ संघीय ढांचा मौजूद था उन्होंने उसे समाप्त कर दिया है। वे उन सभी मुद्दों का जवाब नहीं देते हैं।

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) : वे किसी व्यवधान के बिना 45 मिनट तक बोले हैं। वे हमारे जवाब को सहन नहीं कर सकते हैं। सी. पी. एम. का यही तरीका है। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी : शायद मैं माननीय सदस्य से यही अनुरोध कर सकता था कि वे अपने मुख्य मन्त्री के पदचिह्नों पर चलें। हमारे दृष्टिकोण से सोचिए। अपनी आंखें खोलिए। पता लगाइए क्या हो रहा है। यदि आप अपनी आंखें खोलें तो आपको पता लगेगा। पश्चिमी बंगाल जाकर पता लगाइए।

हम बहु राष्ट्रिक कम्पनियों से तथाशक्ति सम्पन्न विदेशी कम्पनियों से सौदा कर रहे हैं, परन्तु ऐसा करते समय हम अपनी स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारों और कार्यों से कोई समझौता नहीं कर रहे हैं। यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जानी चाहिए। दुर्भाग्यवश विपक्ष अर्थव्यवस्था और हमारे समाज की परिस्थितियों के बारे में निष्पक्षता से सोचने के लिए तैयार नहीं है केवल मात्र शोरगुल मचाना ही पर्याप्त

नहीं है। आपको वस्तुपरकता से सोचना है और विशिष्ट वैकल्पिक कार्यक्रम तथा विचार सामने रखने हैं, यदि आप ऐसा कर सकते हैं। परन्तु अब तक उनमें यह चीज पैदा नहीं हो पाई है। और यह बात इस चर्चा के दौरान भी देखी गई है। कांग्रेस परिवर्तन से नहीं डरती है। कांग्रेस यह जानती है कि वास्तविकताओं से कैसे सीखा जाता है, परिवर्तन कैसे लाया जाता है और अर्थव्यवस्था में तेजी कैसे लाई जाती है, सामाजिक परिवर्तन कैसे लाया जाना चाहिए और देश के सांस्कृतिक जीवन में कैसे सुधार किया जाना चाहिए। कांग्रेस और देश को पंडित जी का यही योगदान था। बम्बई में मेरे भाषण का यही आधार था। मुझे खुशी है कि श्री माधव रेड्डी ने बम्बई में दिए गए मेरे भाषण का उल्लेख किया और मैं केवल अनुरोध करूंगा, शायद मुझे उनसे पूछना चाहिए कि क्या विपक्ष के किसी दल में ऐसा आत्मपरीक्षण करने का आत्म-विश्वास है और यदि आप में है तो मैं अनुरोध करूंगा कि आप ऐसा करें···। (व्यवधान) आपकी बारी आ चुकी, अब मुझे बोलने दीजिए।

क्या आप में से किसी व्यक्ति में बदलते हुए विश्व और देश में बदलती परिस्थितियों के बारे में चिन्तन करने का साहस है? क्या आप में से कोई व्यक्ति अपनी आलोचना करने का साहस कर सकता है? क्यों आप में से किसी में नए विचारों को ग्रहण करने का साहस है? तथ्य यह है कि कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है।

(व्यवधान)

बम्बई में मेरा भाषण कांग्रेस के मूल्यों पर आधारित था जो गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू तथा इन्दिरा गांधी ने स्थापित किए थे। उनमें कोई व्यतिक्रम नहीं था। हमने उन मूल्यों को बनाए रखा है। और मैं माननीय सदस्यों को यह याद दिलाना चाहूंगा कि ऐसा पहली बार ही नहीं हुआ है कि कांग्रेस ने अपने अन्दर झांक कर देखा है, बल्कि ऐसे अनेक अवसर आए हैं जब कांग्रेस ने अपने आप को परिमार्जित किया है।

सत्ता के दलालों के बारे में काफी कुछ कहा गया था। कांग्रेस ने अनेक अवसरों पर इन सत्ता के दलालों को निकालकर बाहर किया है, परन्तु आज हम इन दलालों को कहां पाते हैं? ये सत्ता के दलाल कहां हैं जिन्हें आज कांग्रेस निकालकर बाहर किया गया है? मैं उन्हें अपने सामने वाले बैंचों पर बैठे देखता हूं···(व्यवधान)

मैं इसे नहीं मानता···(व्यवधान)

मैं अपने मित्रों से अनुरोध करूंगा कि वे अपने आपको टटोलें···।

(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान पैदा न कीजिए। कृपया बैठ जाइए। इसे सभा की कार्यवाही में शामिल नहीं किया जाएगा। कृपया बैठ जाइए। श्री रामधन, कृपया बैठ जाइए।···क्या आप अपने-अपने स्थान पर बैठेंगे।

(व्यवधान)

**कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए, बैठ जाइए। आप क्यों झगड़ा कर रहे हैं।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : मुझे बहुत खेद है कि मैंने कुछ माननीय सदस्यों के कोमल भावनाओं को छ दिया है। मेरा इरादा वह नहीं था। मुझे बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहिए ; मैं किसी एक, दो या तीन व्यक्तियों की बात नहीं कर रहा हूं, मैं इससे काफी परे जा रहा हूं, मैं उन अधिकांश दलों की बात कर रहा हूं जो आज मेरे सामने बैठे हैं, जिन्होंने अनेक बार अपने लेबल बदले हैं, जिन्होंने अनेक बार अपने झण्डे तथा चुनाव-चिह्न बदले हैं। मैं चहूंगा कि वे अपने अन्दर झांकें। थोड़े से आत्म परीक्षण से कोई हानि नहीं होगी। और जब आप अपने अन्दर झांकने के लिए थोड़ा-सा समय ले ही रहे हैं तो अपनी बाईं तथा दाईं और भी झांककर देख लीजिए कि आप किसे सहयोग दे रहे हैं और आप किसके साथ बैठे हुए हैं। इससे आपको मदद मिलेगी।

2.00 म० प०

श्री इन्द्रजीत गुप्त : हम भली-भांति जानते हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : हमें आपकी सलाह की जरूरत नहीं है।

श्री राजीव गांधी : तथ्य यह है कि जब कांग्रेस सौ साल पहले इस रास्ते पर चली थी तो हम जानते थे कि यह एक दुष्कर रास्ता है। यह रास्ता सुगम नहीं बनेगा। हम जानते थे कि हर व्यक्ति हमारे साथ काम नहीं करेगा। यहां तक कि स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान भी कुछ लोग जो हमारे साथ थे ब्रिटिश सरकार की सहायता करने के लिए बहुत नाजुक मोड़ पर हमारा साथ छोड़ गए थे ; ताकि स्वतन्त्रता आन्दोलन को विफल किया जा सके (व्यवधान) महोदय, हमें इतिहास को नहीं भूलना चाहिए। (व्यवधान) हम जानते थे कि यह काम दुर्गम तथा कठिन होगा। हम जानते थे कि हमें अन्दर से तथा बाहर से चुनौतियों को सामना करना पड़ेगा। हम उन चुनौतियों का सामना करना चाह रहे हैं और हम आगे भी उनका सामना करेंगे। हम उन चुनौतियों से नजर नहीं चुराएंगे। (व्यवधान) हमें यह देखना चाहिए कि इन वर्षों में क्या होता रहा है। यदि हम अर्थव्यवस्था को देखें तो हमारा देश इतनी तेजी से आगे बढ़ा है जितना कि इससे पहले कभी आगे नहीं बढ़ा। और मैं विरोधी पक्ष के शासन के तीन अनर्थकारी वर्षों का उल्लेख भी नहीं करना चाहता। मैं इसकी तुलना कांग्रेस शासन की पिछली अवधि से कर रहा हूं। किसी भी समय में हमारे देश ने इतनी अधिक प्रगति नहीं की जितनी इन वर्षों में की है (व्यवधान) उद्योग को नई दिशा और नया आयाम मिला है। हमने अपने गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को नया रूप प्रदान किया है। हमने गरीबी को समाप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी का सहारा लिया है। हमने अनेक प्रद्योगिकी मिशन स्थापित किए हैं जो लोगों की दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं पर विचार करने के लिए हम अपने वैज्ञानिकों और लोगों को एक समान स्तर पर इकटठा करेंगे। हमने पेय जल, निरक्षरता, संचार और प्रतिरक्षण क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी मिशन स्थापित किए हैं। विकास के बारे में हमारे विचारों में बुनियादी अन्तर है। (व्यवधान) मैं श्री नरसिंह राव जी द्वारा कही गई बात का उल्लेख करना चाहता हूं। तथ्य यह है कि यहां-वहां हमारे मूल विचारों में अन्तर है। हम लोगों के दैनिक जीवन में विज्ञान

और प्रौद्योगिकी का अधिक अच्छा प्रयोग करके गरीबी को समाप्त कर सकते हैं और देश की प्रगति और विकास कर सकते हैं। दूसरी ओर विरोधी दल का गरीबी को बनाए रखने में निहित स्वार्थ है और यही कारण है कि वह प्रत्येक स्तर पर गरीबी को समाप्त नहीं होने देना चाहते। (व्यवधान) मैंने वामपन्थी दलों के एक बहुत वरिष्ठ नेता से बात की थी। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता, वह यहां उपस्थित नहीं हैं। कम्युनिस्ट पार्टियों में से एक बहुत ही वरिष्ठ नेता ने रोजगार और आधुनिकीकरण के बारे में मेरे से शिकायत की। अब पहले मुझे अपनी बात को ठीक करने दीजिए। उन्होंने कहा कि वह मेरी नीतियों के खिलाफ है क्योंकि मैं आधुनिकीकरण करना चाहता हूं। अतः मैंने कहा कि, "आधुनिकीकरण के लिए आपको क्या आपत्ति है?" निश्चय ही यदि हमारे लोग आगे बढ़ते हैं, प्रगति करते हैं और गरीबी से ऊपर उठते हैं, तो हमें अवश्य ही आधुनिकीकरण करना चाहिए। आधुनिकीकरण और क्या है? उन्होंने कहा कि, "आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप रोजगार के अवसरों में कमी आएगी।" मैंने कहा कि ऐसा होना आवश्यक नहीं है। परन्तु हम कुछ समय के लिए इस तर्क को अलग-अलग रखते हैं। हम रोजगार को आधुनिकीकरण से नहीं जोड़ते। हम रोजगार के बारे में बाद चर्चा करेंगे। हम पहले आधुनिकीकरण के बारे में बात करते हैं। मैंने उनसे पूछा, "कि क्या आप मुझे बता सकते हैं कि भारत 20वीं सदी में स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में आधुनिकीकरण के बिना टिका रह सकता है?" वह लगभग 60 सैकिण्ड तक चुप रहे और फिर उन्होंने कहा "कि रोजगार पर इसका प्रभाव पड़ेगा।" उनका केवल यही उत्तर था।

तथ्य यह है कि आज हमारे देश के वामपन्थी दलों की विचारधारा में पूर्ण रिक्तिता है। उनके विचारों में रिक्तता है। यही बात अधिक बाधा उत्पन्न कर रही है क्योंकि अब तक केवल दक्षिणपन्थी लोगों के विचारों में ही रिक्तिता थी। हमारे पास कम से कम एक ऐसा वर्ग विद्यमान था जिनके साथ हम नीतियों, विचारों तथा मूल सिद्धान्तों पर तर्क वितर्क कर सकते थे। परन्तु आज वह वर्ग भी हमारे साथ नहीं है। आज हमारे दोनों दलों में विचारों की रिक्तिता है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप विचार करना शुरू करें (व्यवधान) यह सोचिए कि इस देश से गरीबी किस प्रकार समाप्त की जा सकती है। यदि आप सम्पूर्ण भारत में ग्रामीण स्तर पर अधिक अच्छी प्रौद्योगिकी का विकास नहीं करते तो आप गरीबी समाप्त नहीं कर सकते।

श्री नारायण चौबे : भूमि सुधार का क्या हुआ?

श्री राजीव गांधी : हम देश में हरित क्रान्ति किस प्रकार लाए हैं? ऐसा केवल किसानों को उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी प्रदान करने से ही सम्भव हुआ है। इसका कोई और उपाय नहीं है। विरोधी पक्ष के हमारे कुछ माननीय सदस्यों के पास कुछ और उपाय है, यदि हमारे पास ट्रैक्टर खाद अच्छे, बीज और सिंचाई सुविधाएं न होती तो हरित क्रान्ति किस प्रकार लाई जाती और हमारे किसानों की क्या स्थिति होती? शायद···

श्री नारायण चौबे : भूमि सुधार का क्या हुआ?

श्री राजीव गांधी : आप अपना प्रश्न अपनी बारी आने पर पूछें।

खाद्य और नागरिक पूर्ति मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (श्री गुलाम नबी आजाद) : बंगाल ने हमेशा इसका विरोध किया है।

श्री नारायण चौबे : बंगाल ने किस बात का विरोध किया है? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक दूसरे से बात न कीजिए।

श्री राजीव गांधी : हमने इन वर्षों में अपने उद्योग को नौवें और दसवें दशक की चुनौतियों का सामना करने के लिए पुनर्गठित किया है। आप चाहे जो भी सोचें औद्योगिक प्रगति प्रभावोत्पादक है। इन तीन वर्षों के दौरान औसतन उत्पादन 9 प्रतिशत से कुछ कम रहा है। मैंने तीन वर्ष कहा है क्योंकि एक सदस्य ने मुझे कहा था, "एक वर्ष का उदाहरण न दें, अथवा कुछ समय का उल्लेख न करें" इस वर्ष के पहले चार महीनों के दौरान औद्योगिक विकास 12.6 प्रतिशत हुआ और जुलाई में औद्योगिक विकास की दर 15.8 प्रतिशत थी। महोदय जुलाई तक के आंकड़े उपलब्ध हैं। मैं किसी भी सदस्य को चुनौती देता हूं कि मुझे दिखाएं कि इस देश के इतिहास में किसी भी और समय में इस दर से औद्योगिक विकास हुआ है। मैंने किसी भी और समय में कहा है। मैं इस समय को स्वतन्त्र भारत के समय तक ही सीमित नहीं कर रहा हूं। 2000 वर्ष पूर्व किसी भी समय का इतिहास देखें और मुझे बताएं।

श्री एम० आर० सैकिया (नवगांव) : आधार-वर्ष कौन सा है ? (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : मैं यूनियनों की बात भी करूंगा। आप चिन्ता न करें। फिर आपको भी बोलने का मौका मिलेगा। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि हमने ऐसी नीतियां तैयार की हैं जिनसे देश में विकास होगा और उससे देश मजबूत होगा और ऐसी नीतियां नहीं बनाई जिनके परिणामस्वरूप राजनीतिक तर्क वितर्क हो हम इस देश के भाविष्य के लिए अपना धन लगा रहे हैं। हम केवल आज को ही नहीं देखते। हम कल की बात सोचते हैं। एक समय जो आज हमारे समक्ष है वह यह कि मैं यह समझता हूं कि हमने पिछले वर्षों में भविष्य के बारे में नहीं सोचा। इस आलोचना में अपनी कांग्रेस सरकार को भी शामिल करता हूं। परन्तु हमेशा पीछे देख कर यह कहना आसान होता है, "कि आपको ऐसा करना चाहिए था, आपने ऐसा किया होता।" हमारी और भी अनेक समस्याएं हैं जिनका हम सामना कर रहे हैं। इसलिए आलोचना करने का प्रयत्न न करके मैं वह बात कहने की कोशिश कर रहा हूं जो मैं आज समझता हूं एक समस्या है। मैं देख रहा हूं कि हमने भविष्य के लिए बहुत अधिक खर्च नहीं किया है, और अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। यदि हम आपकी बात मानें, भविष्य में इस देश के लिए कुछ व्यय नहीं पो पाएगा।

श्री सैफुद्दीन चौधरी : पहले हुए व्यय के बारे में क्या विचार है ?

श्री राजीव गांधी : हमने पिछले वर्षों में भी काफी खर्च किया है। कोई भी सरकार इस देश की संस्कृति और परम्परा को सुरक्षित रखने में उतनी सफल नहीं हुई है जितना हम। मैं वास्तव में इस पर टिप्पणी करना नहीं चाहता, लेकिन मैं समझता हूं इसपर टिप्पणी करने की आवश्यकता है, क्योंकि बदकिस्मती से एक सदस्य ने 'हिन्दू रेट ऑफ ग्रोथ' शब्द प्रयोग किया है। यह बहुत दुर्भाग्य पूर्ण है।

श्री सी० माधव रेड्डी : दुर्भाग्यपूर्ण क्यों ? यह एक स्वीकृत शब्दावली है। हिन्दू रेट आफ ग्रोथ का एक निश्चित अर्थ है।

श्री राजीव गांधी : सभा में इस पक्ष के लोगों के लिए इसका कोई अर्थ नहीं है। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : इस शब्दावली के प्रणेता प्रो० राज कृष्ण थे। यह बहुत बार उद्धृत किया गया है। (**व्यवधान**)

श्री सैफुद्दीन चौधरी : आप बताएं कि इसका क्या अर्थ है।

श्री राजीव गांधी : यह स्पष्ट है कि मैं इसके अर्थ के बारे में आशंकित नहीं हूं मैं इस शब्दावली के बारे में कह रहा हूं। हम इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करना पसन्द नहीं करते। मुझे इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करना बहुत बेइज्जतीपूर्ण लग रहा है। इससे मुझे इसमें उल्लिखित शब्दों में राष्ट्र, जाति की बेइज्जती दिखाई पड़ती है। मैं कहना चाहूंगा—जैसा आपने कहा है इसको अनेक जगह प्रयोग किया गया था—'हां' संभवतः यह एक अर्थशास्त्री ने कहा था। लेकिन आपको याद हो, अर्थशास्त्री ने इसे जनता पार्टी के समय में हो रही घटनाओं के लिए कहा था। यह दुःख की बात है कि कुछ सदस्यों ने आज इसका प्रयोग किया। (**व्यवधान**) वास्तविकता यह है कि यह केवल औद्योगिक प्रगति ही नहीं है बल्कि सब दिशाओं में सबसे अधिक हुई प्रगति है। जी हां, इस वर्ष हमारे यहां भयंकर सूखा पड़ा है। पिछले 100 वर्षों में, जिनका रिकार्ड उपलब्ध है, केवल तीन अवसर ऐसे आए हैं जब निरन्तर दो वर्ष सूखा पड़ा है। यह तीसरा अवसर है। इसके बावजूद हम औद्योगिक प्रगति कर रहे है जैसा मैंने अभी कहा है। इसके बावजूद हम सभी दिशाओं में प्रगति कर रहे हैं, जैसा पिछले किसी ऐसे वर्ष में नहीं हुआ है। 1979 में जब इससे पहले पिछली बार सूखा पड़ा था और वह सूखा ऐसा नहीं था जैसा अब पड़ा है, हमारी पांच प्रतिशत कम प्रगति हुई है। हमारे यहां 20 प्रतिशत अथवा 22 प्रतिशत मुद्रास्फीति हुई थी—मुझे ठीक-ठीक संख्या याद नहीं है। इसलिए हमें सही स्थिति प्राप्त करने दें। वास्तव में इन वर्षों के दौरान देश में इतनी गति से प्रगति और विकास हुआ है जितना अब तक कभी नहीं हुआ। इसके लिए मैं उन सबका, विशेषतः प्रशासन, कर्मचारियों, वैज्ञानिकों, तकनीज्ञियों, प्रबन्धकों, किसानों और निम्न श्रेणी के कामगारों का धन्यवाद करना चाहूंगा जो इसमें शामिल है। अत्यधिक निम्न श्रेणी के कामगारों से मेरा अभिप्राय उन लोगों से हैं। जो सबसे छोटा काम करते हैं। ऐसा केवल इसलिए हो सका क्योंकि हम सबको एक-जुट होकर कार्य करने के लिए प्रेरित करने में समर्थ रहे। हम उन सभी को एक साथ लेकर चलने में समर्थ हुए। हम इसे प्राप्त करने में समर्थ हुए और हमें अपने लोगों पर गर्व है कि उन्होंने इसे प्राप्त किया। जैसा कि मैंने कहा है यह सूखा इतिहास में उल्लिखित सूखों में सबसे भयंकर है। वर्षा के सम्बन्ध में यह सबसे भयंकर स्थिति थी। यदि आप चाहते हैं···

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : क्या आप बैठ जाएंगे ? कुछ भी कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

[हिन्दी]

रामधन जी आपको अच्छा नहीं लगता, आप तो बुजुर्ग आदमी हैं, बैठ जाइए।

[अनुवाद]

यह बहुत बुरी बात है। आप बैठ जाइए।

श्री राजीव गांधी : जैसा कि मैंने कहा इस शताब्दी में केवल दो अवसरों पर—और हमें केवल 1885 से आंकड़े प्राप्त है—लगातार दो वर्ष भयंकर सूखा पड़ा है इस बार वर्षा की खराब स्थिति के कारण निरन्तर दो वर्षों से सूखा पड़ रहा है। इसलिए हमें यह स्पष्ट रूप से जान लेना चाहिए कि क्या हो रहा है। सूखे के बावजूद हमारे बुनियादी ढांचे ने ठीक से कार्य किया है। बुनियादी ढांचे का प्रत्येक

[श्री राजीव गांधी]

पहलू भली प्रकार कार्यरत है। मुझे खुशी है कि माधव रेड्डी जी ने 1977 के सूखे से तुलना की है। मैं भी 1979 के सूखे से तुलना करूंगा। इस वर्ष सूखे की स्थिति सभी रूप में 1979 से भयंकर है। एक बात और जो ध्यान देने योग्य है, वह है वर्षा का समय जिसे मौसम विभाग के आंकड़ों में नहीं दिखाया जाता है। यदि एक निश्चित मात्रा तक वर्षा होती है तो मौसम विभाग कहता है : "कि वर्षा ठीक हुई है" लेकिन यदि वर्षा जुलाई में नहीं होती है और वह सितम्बर में होती है, तो वह किसान के लिए उपयोगी नहीं है। जहां तक उत्पादन का सम्बन्ध है इसका कोई लाभ नहीं है। यह मौसम विभाग के वर्षा के आंकड़ों में शामिल नहीं किया जाता। अब मैंने उन्हें कहा है। वह इस प्रकार आंकड़े भी सम्मिलित करेंगे। वह इसे किसान की दृष्टि से मापेंगे। लेकिन इसके अतिरिक्त इस वर्ष जो वर्षा हुई, वह उत्पादन की दृष्टि से बहुत देर से हुई है। इसलिए सूखे का प्रभाव उससे काफी भयंकर है जैसा आंकड़ों से दिखाई पड़ता है, जैसा कि उन्होंने मौसम विभाग की फाइलों में दिखाया है। इसके बावजूद हमने सूखे की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया। राजस्थान और गुजरात को छोड़कर, जहां पिछले 3 अथवा 4 वर्षों से बुरी स्थिति रही है, कोई अन्य राज्य और मैं कहता हूं कांग्रेस अथवा विपक्ष द्वारा शासित राज्यों, दुर्भाग्यवश कल जब आप मुझसे बात कर रहे थे अथवा जब आप बोल रहे थे, आपने केवल उसका उल्लेख किया था जो मैंने विपक्ष के मुख्य मन्त्रियों के बारे में कहा था। मैं समझता हूं आपने खुद भी वह नोट किया होगा जो मैंने अपने मुख्य मन्त्रियों के बारे में कहा था। मैं बिलकुल स्पष्ट कह रहा हूं। मैंने कुछ घुमा-फिरा कर नहीं कहा है। चाहे वह हमारे मुख्य मन्त्री हैं अथवा वह विपक्ष के मुख्य मन्त्री हैं। सभी राज्य मन्त्री है। सभी राज्य सरकारों को कार्य करना चाहिए और कुछ अनुशासन में कार्य होना चाहिए—राजस्थान और गुजरात के सिवाए किसी राज्य सरकार ने इसे हमारे द्वारा केन्द्र से शुरू करने से पहले कोई सूखा सहायता कार्यक्रम शुरू नही किया था। इसके बाद भी जबकि मेरे राज्यों का दौरा करने से पहले उन्हें एक अथवा दो महीने दिए गए थे। तब भी केवल ऊपरी लीपा पोती थी अथवा कागजों एर कार्यक्रम थे। यह यहां से शुरू हुए। हमने शुरूआत की। आज राज्य सरकारें, मेरे राज्यों सहित मुझे लम्बी सूचियां दे रही हैं हमने अत्यधिक धन व्यय किया है ; हमने इतना धन व्यय किया है। जब हमने उनसे पूछा : आपने यह राशि कहां खर्च की है ? हमें इसके कुछ उदाहरण दें कि 300 करोड़ रु० अथवा 400 करोड़ रु० कहां गए, विशेष तौर से जब आपने 400 करोड़ रु० तीन महीनों में खर्च किए हैं, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

श्री भागवत झा आजाद : ठीक है, बिल्कुल ठीक।

श्री राजीव गांधी : क्या देश में किसी वित्तीय अनुशासन की आवश्यकता नहीं है ? क्या धन फिजूलखर्च करके फेंका जाना चाहिए ? अथवा क्या गरीब जनता का धन ठीक प्रकार से प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए ?

वास्तव में, इस देश में चाहे केन्द्र हो अथवा राज्य, वित्तीय खर्च के सम्बन्ध में कोई जिम्मेदारी नहीं समझता।

श्री वसुदेव आचार्य : केन्द्र में भी ?

श्री राजीव गांधी : मैंने यही कहा है, हम इसे ठीक कर रहे हैं। हम केन्द्र में प्रत्येक क्षेत्र में कड़ाई बरत रहे हैं, और इस देश को प्रगति करनी है, तो राज्यों में भी कड़ाई बरतनी होगी। और कोई चारा नहीं है। प्रशासन की ओर हमारे कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की लागत बहुत अधिक है ; और यह अधिक

लागत केन्द्र में नहीं है। यह केन्द्र में इसलिए नहीं है क्योंकि वितरण कार्य राज्यों का काम है। यह केन्द्र में नहीं है। यदि वितरण का काम केन्द्र का होता तो संभवतः केन्द्र में भी लागत अधिक होती। हम भी उन्हीं के समान अकुशल सिद्ध होते। हमने भी उतनी ही धनराशि उड़ा दी होती। परन्तु वितरण का काम राज्यों का है। अतः कड़ाई राज्यों में होनी चाहिए। सूखे के समय धन की कमी होती है, उन्हें यह सुनिश्चित करने में अनुशासित रहना चाहिए कि धन की फिजूलखर्ची न हो और धन उन्हीं लोगों तक पहुंचे जिनके लिए वह निर्धारित है और हम ऐसा होना देखना चाहते हैं। आप अपने विपक्षी मुख्य मन्त्रियों के बारे में चाहे जितना शोर-शराबा कर लें, उससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है, मैं झुकने वाला नहीं। जब तक मुझे किए गए कार्य के आंकड़े नहीं दिखाए जाते और उन्हें सत्यापित नहीं किया जाता, तब तक हम आगे धनराशि नहीं देंगे। मैंने वित्त मन्त्री को स्पष्ट रूप से बता दिया है। मैंने मन्त्रिमण्डल सचिव को भी स्पष्ट रूप से बता दिया है।

अतः अब हमें इस सम्बन्ध में स्पष्ट हो जाना चाहिए। जैसा मैंने कहा सूखे के बावजूद, सारी समस्यों के बावजूद, बुनियादी ढांचे ने पिछले वर्षों की बनिस्बत अच्छा काम किया है। आप इसकी किसी अन्य सूखा वर्ष या कठिन वर्ष से तुलना कर सकते हैं और आप देखेंगे कि अन्तर पहले से अधिक है। एक समस्या, जो बहुत गम्भीर है और वह मूल्यों में वृद्धि ; और मैं इसका विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा क्योंकि विपक्ष के बहुत थोड़े सदस्यों ने इसका उल्लेख किया है (व्यवधान) वह विपक्ष से नहीं हैं, वह हमारे सदस्य हैं। यह वास्तविक चिन्ता है और मुझे इस बात से ज्यादा दुःख हुआ है कि विपक्ष को इस बात की चिन्ता नहीं है कि मूल्य बढ़ रहे हैं। (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : हमने चर्चाएं उठाई हैं। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैं उसके बारे में बात नहीं कर रहा हूं ; मैं इस बाद-विवाद की बात कर रहा हूं। (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : आपने वाद-विवाद नहीं पढ़े हैं। (व्यवधान)

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : आप मेरा भाषण पढ़िए। मैंने मूल्य वृद्धि का उल्लेख किया है।

श्री नारायण चौबे : मुझे नहीं पता कि आपने हमारे भाषण सुने होंगे। (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : आपके पास कार्यवाही सुनने का समय नहीं है। आप भोपाल में थे।

श्री राजीव गांधी : मैं भोपाल में केवल तीन घण्टे के लिए था। वाद-विवाद कल पूरे दोपहर बाद तक हुआ था। मैं यहां छह बजे से 11.15 बजे तक या कल रात सभा के स्थागित होने तक बैठा था। ऐसी बात नहीं कीजिए।

श्री दिनेश गोस्वामी (गुवाहाटी) : प्रधान मन्त्री जी···

श्री राजीव गांधी : आपने अच्छा भाषण दिया था।

श्री दिनेश गोस्वामी : प्रधान मन्त्री जी, वास्तव में मैंने कहा था कि मूल्यों में वृद्धि इतनी अधिक हो गई है कि यदि विपक्षी सदस्यों की पत्नियां आज मयदान करने आ जातीं तो प्रस्ताव पारित हो जाता। आपने कम-से-कम इतना तो पढ़ा होगा। ऐसा नहीं है कि किसी ने उल्लेख नहीं किया है। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : श्री गोस्वामी जी, धन्यवाद। जो कुछ आपने कहा मैं उसकी प्रशंसा करता हूं और हालांकि जब आपका भाषण हुआ था तब मैं यहां नहीं था। मुझे बताया गया है कि सम्भवत: आपके ही भाषण में कुछ तत्त्व था। (**व्यवधान**)

श्री दिनेश गोस्वामी : आपकी प्रशंसा मेरे लिए राजनैतिक रूप से समस्याएं पैदा कर सकती है।

श्री राजीव गांधी : यह कोई प्रशंसा नहीं थी, मैं सच बात कहने की कोशिश कर रहा था।

मूल्यों के सम्बन्ध में कठिन स्थिति है। मूल्य बढ़ रहे हैं; उन्हें नियन्त्रित किया जाना चाहिए और वित्त मन्त्री इस विषय पर पहले ही बोल चुके हैं। मैं इस पर गहराई से नहीं बोलना चाहता हूं। परन्तु जो भी उपाय आपेक्षित हैं, वे किए जाएंगे; यदि वे कड़े और सख्त भी हुए, तो भी किए जाएंगे। इसमें कोई लापरवाही नहीं बरती जाएगी।

मैं पुन: इस बात पर बल देना चाहता हूं कि हमें सूखा वर्ष की किसी अन्य सूखा वर्ष से तुलना करनी चाहिए। आज—यदि मैं गलत कहूं तो बताइएगा—हमारी मुद्रास्फीति लगभग 10% से कम है; यह दो अंकों में नहीं पहुंची है। आप इसकी तुलना पहले के किसी सूखा वर्ष से करें। मैं आपको इसकी तुलना पिछले दो सूखा वर्षों से करने को नहीं कह रहा हूं, किसी अन्य एक सूखा वर्ष से तुलना कीजिए। 1979 में क्या हुआ था? मुद्रा स्फीति 22 प्रतिशत थी। क्यों? क्योंकि सरकार प्रणाली को नियन्त्रित नहीं कर सकी थी हमने इसे एक ही अंक में बनाए रखा और हम इसे एक ही अंक में रखने के लिए भरसक प्रयास करेंगे क्योंकि सरकार वैसे काम नहीं कर रही जैसा देश में पड़े पिछले सूखे के दौरान हुआ था।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : वह तीन सरकारों का वर्ष था, 1979 तीन सरकारों का वर्ष था। (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : आप अनावश्यक रूप से क्यों बोल रहे हैं?

श्री राजीव गांधी : आप भी उस समय थे; आपका दल भी उसमें था। आपको याद है आपने क्या किया। आपको याद है आपने जो किया था उसे ठीक करने में हमें कितने वर्ष लगे।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : आपकी गलतियों को ठीक करने में हजार साल लगेंगे।

श्री राजीव गांधी : मैं आपको अब भी याद दिला सकता हूं। यदि आप चाहें तो मैं आपको याद दिला सकता हूं। परन्तु मैं सभा को याद नहीं दिलाना चाहता हूं और इस विषय पर सभा का समय नहीं लेना चाहता हूं, जिसके बारे में वास्तव में सबको अच्छी तरह पता है, परन्तु कुछ लोग उसका सामना नहीं करना चाहते हैं।

[**हिन्दी**]

अध्यक्ष महोदय : मैं इनको आपके पास भिजवा दूंगा। आप दोनों कर लेना।

[**अनुवाद**]

श्री राजीव गांधी : मैं इसे अध्यक्षपीठ से वायदा मानता हूं क्योंकि मैंने उन्हें जब भी आने और बात करने को आमन्त्रित किया, वे कभी नहीं आए।

अध्यक्ष महोदय : श्रीमान, क्या आप चाहते हैं कि मैं अपना विनिर्णय दूं ?

श्री राजीव गांधी : कृपया दें।

हमने यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कदम उठाए हैं। कि रबी की फसल अच्छी हो, क्योंकि किसानों और खेत मजदूरों को उनके पैरों पर फिर से खड़ा करने का यही एकमात्र सही तरीका है। कोई सा भी अन्य राहत कार्य उन्हें उस स्थिति में नहीं ला सकता है, क्योंकि ऐसा किया नहीं जा सकता है। हमने यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए हैं कि रबी की फसल अच्छी हो, हर चीज उपलब्ध हो और ऐसा ही हुआ। रबी की फसल अच्छी है। सूखे, ऐसे भयंकर सूखे से निपट पाने का कारण यह है कि 1980 से 1986 तक के पिछले छह वर्षों के दौरान कांग्रेस को इन्दिरा जी के अधीन और हाल ही में इस सरकार के अधीन गठित और एकजुट होने का अवसर मिला और ऐसा केवल इसलिए हुआ क्योंकि हमने इन तीन वर्षों के दौरान मजबूत किया है और इसलिए हम आज सूखे का सामना करने में सफल हुए। अन्यथा यदि 1979 के सूखा के बाद यदि एक दूसरा सूखा पड़ता तो देश के घुटने टिक जाते। विपक्ष की सरकार और कांग्रेस की सरकार के बीच यही अन्तर है।

(व्यवधान)

अनेक सदस्यों ने केन्द्र राज्य सम्बन्धों का प्रश्न उठाया है। और मैं इस पर टिप्पणी करना चाहूंगा। मेरा विचार है कि केन्द्र और राज्य के बीच सम्बन्ध पहले कभी इतने मैत्रीपूर्ण नहीं रहे जितने इन तीन वर्षों के दौरान रहे।

श्री सी० माधव रेड्डी : कारण क्या था।

श्री राजीव गांधी : कारण मैं आपको बताऊंगा इन तीन वर्षों में केन्द्र सरकार ने कितनी राज्य सरकारों को भंग किया। (**व्यवधान**) नहीं, पहले की किसी सरकार को देखें।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : केन्द्र-राज्य सम्बन्ध क्या है ? दोनों का सम्बन्ध साथ साथ काम करने का है, केन्द्र सरकार का राज्य सरकारों तथा मुख्य मन्त्रियों के साथ काम करना है। यदि आप किसी मुख्य मन्त्री को बर्खास्त करते है तो यह एक खराब केन्द्र-राज्य सम्बन्ध है। यदि आप कुछ महीने में नौ राज्य सरकारों को बर्खास्त करते हैं तो इससे खराब सम्बन्ध और क्या हो सकते हैं ? (**व्यवधान**)

जी हां, मुझे उस विषय पर आने दें जहां से मैंने शुरू किया था। मुझे उस विषय पर आने में जहां से मैंने शुरू किया था। आप समस्या के जड़ तक कभी नहीं जाते हैं। आप सिर्फ उपरी सतह तक सीमित रहते हैं। केन्द्र-राज्य सम्बन्धों की जड़ उन्हें बिना बर्खास्त किये साथ काम करना है, जो आप नहीं कर सके।

श्री वी० किशोरचन्द्र एस० देव (पार्वतीपुरम) : 1980 में क्या हुआ था ?

श्री राजीव गांधी : 1980 में, मैं खुद कहता हूं यह गलत था—मेरे विचार से गलत था—परन्तु यह गलती इसलिए हुई कि बर्खास्तगी 1977 में भी हुई थी। वह जो सरकारें थीं वह ठीक नहीं थीं। यही कारण है कि ऐसा किया गया। यह गलती एक गलत काम को ठीक करने के लिए थी।

श्री बसुदेव आचार्य : एन० टी० रामाराव की सरकार क्यों बर्खास्त की गई थी ? (**व्यवधान**)

श्री एस० जयपाल रेड्डी : कश्मीर सरकार के बारे में आप क्या कहेंगे ? पंजाब सरकार के साथ हाल में ऐसा क्यों हुआ ?

श्री बसुदेव आचार्य : पंजाब सरकार के साथ क्या हुआ ?

श्री राजीव गांधी : सिर्फ पंजाब सरकार के बारे में मैं अपने निर्णय से सन्तुष्ट हूं। यह राजनीतिक कारण से नहीं लिया गया था बल्कि प्रशासन बिखर गया था। हमें स्पष्ट होना चाहिए। आचार्य जी आप तर्क दे सकते हैं लेकिन हमें स्पष्ट होना चाहिए। सरकार बर्खास्त करने का उदाहरण 1977 में स्थापित किया गया था। जब नौ राज्य सरकारों को एक बार में ही बर्खास्त किया गया था।

श्री बसुदेव आचार्य : 1959 में केरल में एक चुनी हुई सरकार को बर्खास्त किया गया था।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : आपने केरल का उल्लेख किया है। आज भी यदि मैं किसी राज्य सरकार को देश विरोधी पाता हूं, तो मैं उस सरकार को बर्खास्त करूंगा चाहे वह कितने भी बहुमत में क्यों न हो। (व्यवधान)

[हिन्दी]

आचार्य जी, आप बैठ जाइए।

[अनुवाद]

महोदय, केन्द्र राज्य सम्बन्धों में, कांग्रेस तथा विपक्ष द्वारा चलाई जा रही सरकारों के बीच धनराशि के आवंटन में पक्षपात का कोई एक मामला है ? एक भी मामला नहीं है।

(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुड़ा) : सैकड़ों मामले हैं। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : एक मामले का नाम बताइए।

श्री नारायण चौबे : आप बताइए पिछले दस वर्षों में आपने पश्चिम बंगाल को कितनी फैक्टरियां दी हैं, एक फैक्टरी का नाम बताएं···(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैं फैक्टरी के बारे में बात नहीं कर रहा हूं। मैं योजना आवंटनों के बारे में बात कर रहा हूं।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप मानते क्यों नहीं हैं, क्या करते हैं बीच-बीच में···

(व्यवधान)

आपके सफेद बाल हो गये हैं, फिर भी काबू नहीं आते हैं।

(व्यवधान)

आप बैठिए श्रीमान् ।

[अनुवाद]

आप क्या कर रहे हैं महोदय···(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : आठवें वित्त आयोग ने जितने धन की सिफारिश की थी वह पश्चिम बंगाल को नहीं दिया गया है ।

श्री राजीव गांधी : क्योंकि, मुझे विश्वास है, पश्चिम बंगाल, मुझे सही-सही जानकारी याद नहीं आ रही है, ने अपने भाग को पूरा नहीं किया ।

श्री बसुदेव आचार्य : मैं आपको बता सकता हूं ।

श्री राजीव गांधी : हम इस पर ध्यान दे सकते हैं । (व्यवधान) हम उस बात पर ध्यान दे सकते हैं । और यदि मैं ठीक हूं तो यह काम पिछली सरकार ने किया था न कि इस सरकार ने । इसलिए यह मामला इस विषय में नहीं आता है, यह इस विषय के क्षेत्र में नहीं है (व्यवधान) महोदय, इसे ज्यादा स्पष्ट करने दें, यदि हम···(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कुमारी ममता बनर्जी आप कृपया बैठ जाइए ।

श्री अजय विश्वास (त्रिपुरा पश्चिम) : महोदय, त्रिपुरा को सातवीं योजना में प्रति व्यक्ति आवंटन, उत्तरपूर्व क्षेत्र के अन्य राज्यों की अपेक्षा कम किया गया है । नागालैंड में यह 4000 से ज्यादा है, त्रिपुरा के मामले में यह 2200 है ।

श्री राजीव गांधी : महोदय, मेरे पास यहां आंकड़े नहीं हैं मैं अपनी याद से बता रहा हूं त्रिपुरा को देश के औसत आवंटन का डेढ़ से दो गुना तक दिया गया है । (व्यवधान)

श्री अजय विश्वास : त्रिपुरा में यह 2200 है और नागालैंड में 4000 है ।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : आपको दुगुनी धनराशि का आवंटन हुआ है और आप शिकायत कर रहे हैं ।

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इसकी अनुमति नहीं है । मैं इन व्यवधानों को अनुमति नहीं दे रहा हूं ।

श्री राजीव गांधी : पूर्वी क्षेत्र में मिजोरम और सिक्किम भी है । (व्यवधान)

जी हां, विपक्ष द्वारा चलाई जा रही सरकारें भी हैं । आप इसे, इस प्रकार अलग नहीं कर सकते । असम भी है । परन्तु हमें एक बात पर सावधान रहना चाहिए । और मैं इस विषय पर वापस आना चाहता हूं, राज्यों के वित्तीय अनुशासन पर योजना धनराशि का गैर योजना गतिविधियों पर

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया ।

[श्री राजीव गांधी]

खर्च—हम इस प्रकार करते नहीं रह सकते हैं। देश इतना धनी नहीं है कि गरीब जनता का पैसा बर्बाद करे। इसका भविष्य के लिए निवेश किया जाना चाहिए। (व्यवधान) मैं कोई उल्लेख करना नहीं चाहता हूं। मैं पश्चिम बंगाल का भी उल्लेख कर सकता हूं। आपकी छठी योजना का क्या हुआ। (व्यवधान)

एक विशेष राज्य—मेरे सदस्यों को इसकी जानकारी नहीं होगी, जिसका मैंने दौरा किया, मैं उस राज्य का नाम लेना नहीं चाहता, शायद अपना दोष महसूस कर आप उस राज्य का नाम जान जाएं, उस विशेष राज्य का मैंने दौरा किया तथा मैंने मुख्यमंत्री से बात की। हमने योजना निष्पादन पर बात की। प्रत्येक क्षेत्र में वे अपने लक्ष्य से नीचे थे, और एक-दो प्रतिशत नहीं, बल्कि पचास-साठ और सत्तर प्रतिशत तक पीछे थे और वह भी महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे कि विद्युत, ऊर्जा तथा कृषि में, सिर्फ एक क्षेत्र में उन्होंने लक्ष्य से ज्यादा खर्च किया है, लक्ष्य से 50 प्रतिशत ज्यादा और वह···

एक माननीय सदस्य : प्रचार

श्री राजीव गांधी : और वह क्षेत्र प्रचार था।

श्री वसुदेव आचार्य : तब भी आप पिछले विधानसभा चुनावों में हार गये।

श्री राजीव गांधी : धन्यवाद, आचार्य जी। आपने हमारे सदस्यों को बताया कि यह कौन-सा राज्य है। (व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : जनता ने उन्हें अस्वीकार कर दिया है। यदि उनमें साहस हो, तो वे चुनाव लड़ें। (व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्होंने पूरी कोशिश की। वे असत्य को दोहराने में लगे रहे, किन्तु जनता ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। (व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप कृपा करके बैठिए अब। बैरागी जी आप कुछ कहना चाहते हैं, कोई शेर याद आ गया है क्या ?

श्री बालकवि बैरागी (मंदसौर) : मैं अपने प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी से इस सारे संदर्भ में केवल 4 पंक्तियां कहना चाहता हूं—

इससे ज्यादा आईना इनको मत दिखलाइये,
वैसे ही बदशक्ल हैं, बेनूर हैं, डर जायेंगे।
आईने को तोड़ देना जिद है इनके हुस्न की,
इस मशक्कत में बिचारे खुद ब खुद मर जायेंगे॥

श्री राजीव गांधी : मैं कोशिश तो बहुत करूंगा आदरणीय मेम्बर की सलाह लेने की।

अध्यक्ष महोदय : श्री रामधन जी, आप भी कोई शेर पढ़ रहे हैं क्या ?

श्री रामधन : अध्यक्ष महोदय,

यों तो हम जानते हैं जन्नत की हकीकत,
लेकिन दिल के बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है।

(व्यवधान)

श्री गुलाम नबी आजाद : बैरागी जी ने इन्हीं को कहा था आईना देखने के लिए।

(व्यवधान)

2.38 म० प०

[उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

श्री राजीव गांधी : उपाध्यक्ष महोदय, मैं कोशिश तो करूंगा कि आईना ना दिखाऊं, लेकिन जो खुद उठाकर देख लेते हैं, उनको मैं रोक नहीं सकता।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय, हम राज्य सरकारों के साथ बड़े सशक्त तथा अच्छे सम्बन्ध रखना चाहेंगे क्योंकि हम यह जानते तथा महसूस करते हैं कि विकास तथा राष्ट्र-निर्माण का कार्य इस प्रकार का नहीं है कि केवल केन्द्र से अथवा केवल राज्यों से संचालित किया जा सके। यह राज्यों तथा केन्द्र दोनों द्वारा की जाने वाली एक संयुक्त प्रक्रिया होती है। इसीलिए, प्रत्येक स्थिति में हमने इस सेतु को बनाने का प्रयत्न किया है तथा चाहे हमें कठिनाइयां हों, फिर भी हम इस प्रयत्न को जारी रखेंगे। न केवल विपक्षी राज्यों में कठिनाइयां हैं बल्कि हमारे अपने राज्यों में भी कठिनाइयां हैं क्योंकि वहां निर्धारित कार्य हैं तथा आपको उनसे अलग होना होता है। किन्तु प्रयत्न जारी रहने चाहिए तथा हम इन प्रयत्नों को अवश्य जारी रखेंगे। हमें सुनिश्चित करना है कि राज्यों में हमारे प्राकृतिक संसाधनों के पोषण तथा संरक्षण के लिए समान वचनबद्धता है। दुर्भाग्य से इसे राज्य स्तर पर तथा संभवतया इससे भी नीचे जिला स्तर पर पर्याप्त रूप से महसूसस नहीं किया जाता है। यह जागृति पैदा की जानी चाहिए।

महोदय, हम पूर्णतया तथा समग्रतया प्रैस की आजादी चाहते हैं। हमने इस आजादी को बनाए रखा···(व्यवधान) जिस तरह हमने अपने सभी आधारभूत प्रजातान्त्रिक अधिकारों को बनाए रखा है। इसमें कोई अन्तर नहीं है। प्रैस की आजादी इस अधिकार का एक हिस्सा है। वास्तव में, आज केवल प्रैस की आजादी की ही नहीं बल्कि उनके अधिपतियों से प्रैस की आजादी की भी जरूरत है। इसके निर्धारित किए जाने की भी जरूरत है। केवल एक ही काफी नहीं है। मैं गंभीरता से कह रहा हूं, मैं इसे मुद्दा बनाने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। इसको अच्छी तरह किया जाना है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना बड़ा अथवा छोटा अथवा अच्छे सम्पर्क वाला क्यों न हो, विधि-प्रक्रिया से बच नहीं सकता है। ऐसा मैंने इस सभा में कहा है, ऐसा मैंने बहुत से अवसरों पर कहा है। श्री उन्नीकृष्णन जी ने कल एक टिप्पणी की थी। मैं अब वही कहूंगा। इस देश में कोई भी कानून से ऊपर नहीं है, चाहे वह कितना भी सम्पर्क वाला हो, चाहे वह कितने ही उच्च पद पर हो, चाहे वह प्रैस से सम्बद्ध क्यों न हो। कानून प्रैस पर उतना ही प्रभावकारी है। प्रैस के लिए कोई अलग कानून नहीं है। यदि वे कानून तोड़ेंगे, तो उन्हें नियमानुसार दंडित किया जाएगा। हमें यह स्पष्ट रूप से जान लेना चाहिए···

(व्यवधान)

श्री एस० जयपाल रेड्डी : महोदय, नेशनल हेराल्ड के बारे में क्या विचार है? (**व्यवधान**) नेशनल हेराल्ड को पट्टा-अनुबन्ध का उल्लंघन कर भवन के बड़े भाग को किराए पर चढ़ाने के लिए सरकार द्वारा दोषी पाया गया है। प्रधानमंत्री जी, क्या आपको इसकी जानकारी है?

श्री राजीव गांधी : मैंने कहा है कि जहां भी कानून का उल्लंघन होगा, वहां कार्यवाही की जाएगी। किसी का बचाव अथवा परिरक्षण नहीं किया जाएगा। मैं आपको इससे अधिक स्पष्ट नहीं बता सकता तथा चाहे हम आपको वापस आपके स्कूल क्यों न भेज दें, आप इसको स्पष्ट नहीं कर सकेंगे···(**व्यवधान**)। महोदय, इस सरकार को संविधान, न्याय पालिका, देश की विधि तथा संसद में पूर्ण विश्वास है तथा हमने स्वयं को सभी संस्थाओं के लिए मुक्त रखा है। हम किसी भी समय उनका सामना करने से हटे नहीं हैं, किन्तु दुर्भाग्य से यह बात उन बहुत से सदस्यों के बारे में नहीं कही जा सकती, जो सभा में विपक्ष में हैं। मैं उनसे भी अनुरोध करूंगा कि वे उपदेश देने के बजाय स्वयं को इन संस्थाओं के प्रति समर्पित कर दें।

महोदय, विदेश नीति पर केवल कुछ लोगों ने चर्चा की। मुझे इस बारे में कुछ खेद है क्योंकि हमारी आन्तरिक नीति उसी प्रकार से विदेश नीति से सम्बद्ध है जिस प्रकार से यह हमारी आन्तरिक स्वदेशी नीति के प्रत्येक भाग से सम्बद्ध है। दुर्भाग्य से, विपक्ष के बहुत से सदस्यों ने इसको महसूस नहीं किया है यह कहा गया है कि हमने अपनी विदेश नीति में परिवर्तन किया है। किसी ने कहा कि पहल नहीं की गई है। मैं स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं कर सकता कि इस सरकार के इतने महीनों में इतनी पहल की गई तथा इसकी तुलना पंडित जी अथवा इंदिरा जी अथवा शास्त्री जी के समय के समान महीनों से करें।

[**हिन्दी**]

लेकिन मैं आईना नहीं दिखाना चाहता हूं, उसके तो कहने की जरूरत ही नहीं। (**व्यवधान**)

[**अनुवाद**]

किन्तु इस सरकार ने जितनी पहल की है, मेरा विचार है कि कुछ अन्य सरकारों ने विशेष रूप से इसी समयावधि में, जिसके बारे में हम चर्चा कर रहे हैं, उतनी पहल नहीं की है तथा आप किसी भी क्षेत्र—चाहे दक्षिण अफ्रीका, चाहे ए. एन. सी., चाहे स्वापों, फ्रंट लाइन स्टेट्स, गुट निरपेक्ष आंदोलन अफ्रीका कोष, राष्ट्रमंडल, प्रतिष्ठित व्यक्ति समूह, छः राष्ट्र पांच महाद्वीपीय पहल, पर्यावरण, निःशस्त्रीकरण तथा विकास, इससे भी आगे दक्षेस—पर चर्चा कर सकते हैं, निश्चय ही तीन वर्ष की समयावधि में, शायद किसी अन्य प्रशासन से अधिक विस्तृत है। यह एक अन्तहीन सूची है।

सभा में श्रीलंका समझौते की कुछ आलोचना हुई है। मैं दोहराता हूं कि यह एक ऐतिहासिक समझौता है। इसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से सराहा गया है तथा यह तमिलों की सभी उचित प्रत्याशाओं का उत्तर देता है। वास्तव में, यह उससे अधिक है···(**व्यवधान**)

श्री एन० वी० एन० सोमू (मद्रास उत्तर) : नहीं, महोदय। निश्चित रूप से नहीं। (**व्यवधान**)

2.46 म० प०

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

श्री राजीव गांधी : क्या आप मेरी बात सुनेंगे? जब मैं अपनी बात समाप्त कर लूं तब आप

अपनी टिप्पणी दे सकते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू, बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : महोदय, मैं इनकी बात नहीं मान रहा हूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू, आपको मेरी अनुमति लेनी है। बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री एन० बी० एन० सोमू : महोदय, यहां यह कहा गया है कि भारतीय शांति सेना (आई० पी० के० एफ०) जयवर्द्धने के कमाण्ड के अधीन है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या भारतीय सेना के कमाण्डर हमारे राष्ट्रपति हैं अथवा श्रीलंका के राष्ट्रपति। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू, कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप क्यों शोर कर रहे हैं? बैठिए, मि० सोमू।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : वे उसका उत्तर देंगे।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैं आपको इसका अवसर दूंगा। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : वह जानना चाहते हैं कि क्या श्री जयवर्द्धने इसके कमांडर-इन-चीफ हैं।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैं मात्र उनसे यह पूछना चाह रहा था जब वे किसी दस्तावेज अथवा किसी समाचार-पत्र से उद्धरण दे रहे थे। क्या माननीय सदस्य उसमें कही गयी बात को प्रामाणिक मानते हुए उत्तर देना चाहेंगे?

(व्यवधान)

श्री एन० बी० एन० सोमू : जी हां, महोदय, यह बात श्रीलंका की संसद में मंत्री श्री विन्सेन्ट पेरेरे द्वारा कही गयी है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू, आपको यह महसूस करना चाहिए कि कल इस विषय पर काफी गर्मागर्मी रही है। हमारे पास काफी समय था। जब आप इसे सभा पटल पर रख रहे हैं तो आप जो कुछ कह रहे हैं आपको उसे प्रमाणित करना होगा और उसकी पूरी जिम्मेदारी लेनी होगी। आपको यह करना है। मैं आपको मात्र चेतावनी दे रहा हूं।

श्री एन० वी० एन० सोमू : मैं 'हिन्दू' समाचार पत्र पर पूर्ण विश्वास रखता हूं। श्रीलंका की संसद में यह कहा गया है **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : जो कुछ श्री लंका की संसद में कहा गया है वही समाचारों में छपा है। इसकी प्रमाणिकता इत्यादि को प्रमाणित करने का प्रश्न कहां है ? **(व्यवधान)**

श्री एन० वी० एन० सोमू : यह समाचार प्रैस ट्रस्ट आफ इण्डिया द्वारा हिन्दू समाचार-पत्र में छापा गया है।

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपकी बात सुन ली है। अब आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने किसी भी सदस्य को बोलने की अनुमति नहीं दी है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने यह कहा है कि यह समाचार पत्र में छपी एक खबर है। अब मेरी बात सुनिए।

श्री एन० वी० एन० सोमू : यह श्रीलंका की संसद में कहा गया है।

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमू, कृपया मेरी बात सुनिए। कई बार कई बातों को जोड़-तोड़ दिया जाता है और गलत छाप दिया जाता है। यही बात वे कह रहे हैं। अब ठीक है। आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन (वडागरा) : उन्हें इस बात से इन्कार करने दीजिए। प्रधानमन्त्री को इस इस बात से इन्कार करने दीजिए।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप शोर क्यों कर रहे हैं, मुझे समझ में नहीं आता।

[अनुवाद]

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन : वे इन्कार क्यों नहीं कर देते ? **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : आप सबको क्या हो गया है ? मैं आपको नाम लेकर पुकारूंगा आप इस तरह का व्यवहार मत कीजिए।

श्री राजीव गांधी : महोदय, हम सभी भारतीय हैं।

श्री एन० वी० एन० सोमू : पहले मैं तमिल हूं और बाद में भारतीय। **(व्यवधान)**

श्री राजीव गांधी : महोदय, संक्षेप में यह विपक्ष में जो हो रहा है उसका दुःखद भाग है। पहले वे तमिल तथा आन्ध्रवासी तथा बंगाली हैं और कुछ नहीं।

श्री बसुदेव आचार्य : जी, नहीं, हमारा दृष्टिकोण वह नहीं है। यह उनका व्यक्तिगत दृष्टिकोण है। (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : महोदय, हमें स्पष्ट हो जाना चाहिए। (**व्यवधान**)। महोदय, इस सभा को कम से कम यह संकल्प लेना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस सभा में बैठा है वह भारतीय पहले है। महोदय, मैं विपक्ष में बैठे माननीय सदस्यों से यह सुनना चाहूंगा कि वे भारतीय पहले हैं और बाद कुछ और। जी, हां, श्रीमान। (**व्यवधान**) एक सदस्य कह रहे हैं 'जी नहीं'। (**व्यवधान**)। वे यह कहें कि वह भारतीय पहले हैं।

श्री एन० वी० एन० सोमू : भाषा के आधार पर मैं एक तमिल हूं, परन्तु राष्ट्रीयता से मैं एक भारतीय हूं।

(**व्यवधान**)

श्री एस० जयपाल रेड्डी : महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : आपका व्यवस्था का प्रश्न क्या है ?

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : अब बैठ जाइए।

(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : वे यह भी नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। 30 सेकंडों में वे यहां से वहां गए और वापस आ गए। शायद, जिस समय तक मैं बोलना समाप्त कर दूंगा, वे फिर से तमिल बन जाएंगे।

(**व्यवधान**)

श्री सोमनाथ चटर्जी : महोदय, यह क्या हो रहा है ?

श्री राजीव गांधी : महोदय, गुट-निरपेक्ष—मैं (**व्यवधान**) ठीक है, मैं इसे छोड़ दूंगा।

गुट-निरपेक्षता में भारत ने भूमिका निभाई है···।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : महोदय, उन्हें पहले इस प्रश्न का उत्तर देने दीजिए। (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : वे इस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं। अब बैठकर सुनिए।

(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : मैं उसका जवाब दूंगा। संक्षेप में, जो कुछ श्रीलंका की संसद में कहा गया है, उसकी मुझे जानकारी नहीं है। मैं···नहीं सकती।

(**व्यवधान**)

श्री एन० वी० एन० सोमू : हिन्दू में यह बात कही गई है।

श्री राजीव गांधी : दि हिन्दू, चाहे आप इस समाचार-पत्र को चारों तरफ लहराओं, यह श्रीलंका की संसद का रिकार्ड नहीं है। **(व्यवधान)**

श्री इन्द्रजीत गुप्त : यह सच है कि हमारे दल ने समझौते का समर्थन किया है, परन्तु हमें कभी भी इस बात की सूचना नहीं दी गई थी कि भारतीय शान्ति सेना (आई० के० पी० एफ०) हमारे अपने सेनापतियों के अधीन नहीं रहेगी बल्कि राष्ट्रपति जयवर्द्धने के कमान्ड में रहेगी।

श्री राजीव गांधी : भारतीय शान्ति सेना हमारे अपने सेनापतियों के कमान्ड में है। मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि श्रीलंका की संसद में क्या कहा गया है। और मुझे जिस बात की जानकारी नहीं है उस पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। **(व्यवधान)** 'दि हिन्दू' श्रीलंका की संसद का रिकार्ड नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री जयपाल रेड्डी, क्या आप किसी समय चुप भी रह सकते हो ? कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : महोदय, भारत की अध्यक्षता में गुट-निरपेक्ष आन्दोलन में वह शक्ति आई जो इसमें पहले कभी नहीं थी और जिसे वह बीच की अवधि में खो चुका था। जहां तक एस० ए० ए० आर० सी० का सम्बन्ध है, भारत के नेतृत्व में ही इस संगठन की वास्तव में जड़ें मजबूत हुई हैं और यह मजबूत बना है। जैसा कि मैंने पहले कहा था, राष्ट्रमण्डल में, संयुक्त संघ में, भारत ने हर पहलु से काफी सकारात्मक भूमिका निभाई है। चीन के साथ हमने बात आगे बढ़ाई है। तनाव समाप्त किए गए हैं, बातचीत के दरवाजे खोले गए हैं और सम्भवतः मैं इसकी तुलना जनता दल के राज के दौरान जो कुछ हुआ था उसके साथ कर सकता हूं, जब हमारे विदेश मन्त्री चीन में मौजूद थे और चीन ने वियतनाम पर आक्रमण करके राष्ट्र को नीचा दिखाया था। आपकी विदेश नीति और हमारी विदेश नीति में यही अन्तर है। कम्पूचिया के मामले में भारत ने दोनों नेताओं को एक साथ मिलाने में प्रमुख भूमिका अदा की है।

जैसा कि मैंने दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्ध में कहा, भारत ने सोवियत संघ के साथ अच्छी मित्रता निभाई है और यहां मुझे हमारे मित्रों के लिए एक विशेष शब्द सूझता है क्योंकि जब हम अमरीका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ संबंधों में सुधार ला रहे हैं, हमारे मित्र हमारी प्रगति के बारे में बहुत उत्तेजित हैं उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं है कि सोवियत संघ के साथ इस अवधि में भी क्या हो रहा है। शायद वे वास्तव में इच्छुक नहीं हैं क्योंकि यदि वे होते, तो उन्हें वास्तविकता ज्ञात होती। इससे पहले कभी भी दो देशों के बीच इतने अधिक उच्च स्तर के दौरे नहीं हुए। इससे पहले कभी भी सोवियत संघ और भारत के बीच अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर—दुतरफा मामलों पर ऊंचे स्तर पर और निम्न स्तर पर इस प्रकार आन्तरिक सम्बन्ध स्थापित नहीं हुए। दिल्ली उद्घोषणा अपने आप में एक अलग प्रकार की उद्-

घोषणा थी जहां पहली बार संभवत: एक बड़ी शक्ति अहिंसा को मानने को तैयार हुई थी और दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए थे, जो अहिंसा पर आधारित है। क्या यह राजनयिक पहल नहीं है ? यहां तक कि वाशिंगटन शिखर सम्मेलन के कागजों की भाषा हमारे विचारों और हमारे दर्शन से मिलती है।

मैं विनम्रतापूर्वक चाहूंगा कि यद्यपि आई० एन० एफ० समझौते पर हस्ताक्षर आज किए गए हैं, ऐसा नहीं है कि ऐसा एक रात में हुआ है। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि पंडितजी ने परमाणु निशस्त्रीकरण की बात गम्भीर विषमातों में कही थी, क्योंकि गांधी जी ने हिरोशिमा में बंब विस्फोट के बाद कहा था कि यदि विश्व को बचाना है तो प्रणाली में परिवर्तन करना आवश्यक है। 40 वर्ष तक भारत इसके लिए लड़ता रहा। इन पिछले तीन वर्षों में हमने जो प्रयास किए हैं संभवत: वे पिछले वर्षों में किसी अवधि में किए गए प्रयासों से बहुत अधिक हैं।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : आप अपने स्वयं के योगदान का उल्लेख नहीं कर रहे हैं।

श्री राजीव गांधी : दुर्भाग्यवश, जो नरसिंह राव जी ने कहा है, वह बिल्कुल ठीक है। आप इतने छिद्रान्वेषी हो गए हैं कि आप दुर्भाग्यवश, केवल अपने को ही देखते हैं और यह दुखद बात है।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : मुझे खुशी है कि आपको दुख हुआ है।

श्री राजीव गांधी : दुर्भाग्यवश इस विश्व में चीजें एक दम शुरू और एकदम समाप्त नहीं की जा सकती हैं विशेषत: जहां प्रमुख नीति विषयक मामलों का सम्बन्ध है।

अध्यक्ष महोदय : मुझे किसको दोष देना चाहिए—नरसिंह राव जी को अथवा···

श्री राजीव गांधी : नरसिंह राव जी ने केवल आयना दिखाया।

अध्यक्ष महोदय : जयपाल सिंह जी को दोष देना है।

श्री राजीव गांधी : हम नरसिंह राव जी को केवल इस बात के लिए दोषी ठहरा सकते हैं कि वह अपने पूर्व अनुभव से बात बता सकते हैं। कोई भी इतना सीधा नहीं है जो यह समझे कि प्रमुख नीति विषयक निर्णय रातोंरात ले लिए जाते हैं। ऐसा वर्षों के बाद, कई दशकों के प्रयत्नों के बाद होता है जब उचित वातावरण होता है और घटननाएं अचानक होती हैं। ऐसा कई दशकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप हुआ है जो पंडित जी ने, इन्दिरा जी ने और भारत ने किए हैं। यह गांधी जी के विचारों को अपनाने वाले दशक हैं, जिन्होंने इसका नेतृत्व किया है। इसमें भारत की भूमिका कम मत करिए। हमें भारत की भूमिका पर गर्व है। भारत की भूमिका पर गर्व करिए। प्रत्येक के जीवन में कुछ क्षण, कुछ अवसर ऐसे होते हैं जब किसी को राष्ट्र के हित के लिए छोटे-मोटे मतभेदों से ऊपर उठना होता है। कृपया कभी-कभी ऐसा अवश्य करें।

महोदय, सोवियत संघ के साथ हमने पहली बार सोवियत संघ से बाहर भारत में सोवियत उत्सव आयोजित किया है। यह सरकार से परे सोवियत संघ के लोगों और भारत के लोगों की मित्रता का द्योतक है। प्रौद्योगिकी में हमने सोवियत संघ के साथ जो समझौता किया है वह अपने क्षेत्र, अपने विषय और तकनीकी जो उसने हमें दी है, की दृष्टि से अभूतपूर्व है। हमने 1992 तक अपना व्यापार 2-1/2 गुना बढ़ाने का लक्ष्य रखा है और हमारा लक्ष्य इसे प्राप्त करने का है और मैं माननीय सदस्यों को बताना चाहूंगा कि हमने सोवियत संघ के साथ व्यापक सहयोग किये हैं जो कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर 1985 तक किए गए हैं और जब हम 1985 से लेकर 1987 तक किए

[श्री राजीव गांधी]

गए समझौतों की तुलना करें तो हम देखेंगे कि इन तीन वर्षों में उनसे लगभग 1-1/2 से दो गुना तक समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं जो स्वतन्त्रता से अब तक के बीच के वर्षों में हस्ताक्षर किए गए हैं। मैं 1-1/2 से 2 का एक मोटा अन्दाजा दे रहा हूं क्योंकि आयात निर्यात के आधार पर यह कम से कम 1-/12 और अधिक से अधिक 2 गुना है। क्या इससे सम्बन्ध नहीं बढ़ा है? क्या यह राजनयिक गतिविधि नहीं है?

प्रो० एन० जी० रंगा : मास्को में इन्दिरा जी की प्रतिमा स्थापित की गई है। किसी अन्य देश के नेता की कोई प्रतिमा नहीं है।

श्री राजीव गांधी : धन्यवाद, रंगाजी। महोदय, रंगाजी ठीक कह रहे हैं।

प्रो० एन० जी० रंगा : हमने भी लेनिन की प्रतिमा स्थापित की है।

श्री राजीव गांधी : पाकिस्तान के साथ हम सहयोग करना चाहते हैं हम मित्रता चाहते हैं और हम सम्बन्ध सुधारना चाहते हैं। हमने अनेक बार शुरुआत की है। अब मुझे ठीक संख्या याद नहीं है। लेकिन यदि मुझे ठीक याद आ रहा है तो जब मैं काठमांडू में था मैंने उनके प्रधान मन्त्री से बात की थी, मैंने उन्हें बताया था कि हमने 14 बार अपनी ओर से शुरुआत की है और उनकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिला है और जिनमें उनकी तरफ से कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। हमारी ओर से पहल करने में कोई कमी नहीं है। हम संस्कृति, पर्यटन व्यापार, आर्थिक सहयोग के जरिए पाकिस्तान के लोगों से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं दुर्भाग्यवश, पाकिस्तान सरकार का बिल्कुल सहयोग नहीं है चाहे आयात-निर्यात के स्तर हों अथवा उनके परमाणु हथियारों के कार्यक्रम सहित उनके अन्य गतिविधियों से सम्बन्धित हो। मैं इस बात को पुनः दोहरता हूं कि इन वर्षों में भारत गांधी जी और पंडितजी की बुनियादी अभिधारणाओं, सिद्धांतों से बिल्कुल भी नहीं हटा है? उसी आधार पर हमने विकास किया है। यह वह आधार है जिन पर इन्दिराजी ने अपने कार्यक्रमों का विकास किया और हम भी उन्हें मार्गों पर बढ़ रहे हैं और हम इसीलिए सफल रहे हैं क्योंकि हम उन मार्गों पर चले हैं। मुझे अपने माननीय सदस्यों विशेषतः विपक्षी सदस्यों को याद दिलाना है जिन्हें विदेशी नीति के सम्बन्ध में बहुत कम अनुभव है और उनका यह अल्प अनुभव देश के लिए उलझन पैदा कर रहा है इसलिए मैं इसे उठाना नहीं चाहता, चाहे यह स्थिति चीन में हो अथवा क्यूबा में अथवा तनजानिया में हो। यह एक उलझन की अवधि चल रही है। वास्तव में राजनयिक गतिविधि, अच्छी राजनयिक वह है जो बिना बताए की जाती है और इसे हर कोने से चिल्ला कर नहीं बताया जाता है। आपको यह बात समझनी आवश्यक है। यदि आप इसे समझ जाएंगे। जब आप इसे समझ जाएंगे, तभी हमें विदेशी नीति विषयक मामलों पर कुछ सकारात्मक योगदान प्राप्त होगा।

एक अन्य झूठी अफवाह आत्म-निर्भरता के सम्बन्ध में उठाई गई है। यह कहा गया है कि हम इसे खो रहे हैं। इसमें कोई सच्चाई नहीं है। भारत आज पहले से अधिक आत्म-निर्भर और शक्तिशाली है। (**व्यवधान**) स्पष्टतः उन्होंने हमारी आत्म-निर्भरता को सराहा है, आपने नहीं। आप क्या आशा करते हैं?

आप राष्ट्र को कमजोर देखना चाहते हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने श्री कुमारमंगलम की तालो बजाने के लिए कहा है। (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : उद्योग, कृषि, विकसित प्रौद्योगिकी में हमारी सभी नीतियां आत्मनिर्भरता के लक्ष्य से सम्बन्धित हैं। भारत तभी सुदृढ़ और स्वतन्त्र राष्ट्र बन सकता है यदि हम प्रत्येक क्षेत्र में सुदृढ़ हो तथा हर प्रकार से आत्मनिर्भर हो। हम इसी रास्ते पर चल रहे हैं। हमारी यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि भारत किसी भी प्रकार ऋण के भार से नहीं दबा रह सकता और कुछ पुरानी तकनीकों से बंधा नहीं रह सकता जैसाकि कमरे के बाहर हमारे विपक्ष के कुछ मित्रों द्वारा कहा जा रहा है हमें अवश्य ही प्रौद्योगिकी में सुधार करना चाहिए हमें उन जटिलताओं का पता लगाना चाहिए जो आत्मनिर्भर बनने के रास्ते में बाधक हैं। यदि हम पुराने विचारों से बंधे रहे तो हम आत्मनिर्भर नहीं बन सकेंगे। जब मैं 21वीं सदी की बात करता हूं तो मैं मशीनों की बात नहीं करता। मैं तो मानव मस्तिष्क की बात करता हूं। आपका मस्तिष्क अवश्य ही 21वीं सदी के लिए तैयार होना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ है कि हमने अपनी समस्याओं के बारे में नए ढंग से सोचना है जिसके लिए आप तुरन्त तैयार समाधान न खोजें और अपनी समस्या समाधान केन्द्र की ओर न दौड़े और तब आप देखेंगे कि स्वयं उस केन्द्र में ही परिवर्तन आ गया है और तब हमें नए विचार प्राप्त होंगे। ये विचार कामयाब नहीं होंगे। आपको नए ढंग से सोचना होगा। यहां तक कि···

श्री एस० जयपाल रेड्डी : आप किस केन्द्र की बात कर रहे हैं ?

श्री राजीव गांधी : वामपन्थी दल के हमारे मित्र समझ गए हैं कि मैं किस केन्द्र की बात कर रहा हूं।

श्री नारायण चौबे : आपका केन्द्र कौन सा है ?

श्री राजीव गांधी : दिल्ली। हमारा केन्द्र दिल्ली है। आपके विपरीत जो भारत के बाहर हैं। आत्मनिर्भरता के लिए हमारी योजना में लचीलापन होना चाहिए। समस्याओं के आने पर हमें उनका समाधान खोजना चाहिए अपनी विचारधारा, गांधी जी और पंडित जी से प्राप्त विचारों के आधार के अन्तर्गत ही समाधान खोजने चाहिए परन्तु समाधान हमारे अपने होने चाहिए। उनके समक्ष ऐसी समस्याएं नहीं थी। उनके पास इन समस्याओं के समाधान नहीं होंगे। परन्तु उन्होंने हमें दिशा दी है जिससे हमें समाधान प्राप्त होंगे। अतः हमें वह दिशा अपनानी चाहिए और अपने समाधान खोजने चाहिएं। आज इसी बात की आवश्यकता है। यही हम कर रहे हैं। मैं इसकी विस्तार से चर्चा करना नहीं चाहता। यदि हमारे उद्योग और कृषि कार्यकुशल नहीं होंगे तो उद्योग और कृषि आत्मनिर्भर नहीं हो सकते। यह बात अवश्य ध्यान में रखी जानी चाहिए। कार्यकुशलता का अर्थ बेरोजगारी नहीं है। वास्तव में, कार्यकुशलता का अर्थ अधिक रोजगार है जो कार्यकुशलता द्वारा उत्पन्न किया जाएगा। यह बात किसान के लिए भी सच है और फैक्ट्री के लिए भी सच है। यह कार्यालयों और उद्योगों के लिए भी सच है। और हमें यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए। पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा भारत को यही दृष्टिकोण प्रदान किया गया। हमें इसे गलत नहीं समझना चाहिए। जब 35 वर्ग पहले उन्होंने औद्योगिकीकरण की बात की थी तो देश में बहुत से लोगों ने उनका दृढ़तापूर्वक विरोध किया था। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए। उन्हें उन लोगों से संघर्ष करना पड़ा था। हम हर प्रकार से इससे संघर्ष करेंगे। कांग्रेस ने जैसे पहले लड़ाई की थी वैसे ही अब भी लड़ेगी। हम देखेंगे कि भारत विकसित देश बन रहा है यद्यपि हमारे कुछ मित्र ऐसा होने देना नहीं चाहते। एक सदस्य ने सरकारी क्षेत्र के बारे में बहुत लम्बा, असम्बद्ध भाषण दिया है। इन तीन वर्षों में सरकारी क्षेत्र के लिए इतना अधिक किया गया है जितना इससे पहले कभी नहीं किया गया। मैं आपको कुछ नम्बर बताता हूं। मैं उस समय की बात नहीं कर रहा जब हमारी योजनाएं स्थिर नहीं

[श्री राजीव गांधी]

थी। मैं इन्दिरा गांधी के समय का उदाहरण देता हूं क्योंकि उनके समय में अत्यधिक निवेश किया गया था। वर्ष 1980-81 में सरकारी क्षेत्र पर लगभग 21000 करोड़ रुपए खर्च किए गए। 1984-85 में 47,500 करोड़ रुपए खर्च किए गए और हमें आशा है कि 1987-88 में यह बढ़कर 83,500 करोड़ रु० हो जाएंगे। इस प्रकार हम सरकारी क्षेत्र में पूंजी निवेश कर रहे हैं। वर्ष 1984 तथा 1985 के बीच हमने इसमें···(व्यवधान)

[हिन्दी]

अरे, पब्लिक सेक्टर को समझोगे तो खड़े होना।

[अनुवाद]

श्री एस० जयपाल रेड्डी : आप पूर्ण आंकड़े नहीं बल्कि उसकी प्रतिशतता बताइए।

[हिन्दी]

श्री राजीव गांधी : अरे स्कूल भेजना पड़ेगा, तब सीख लेना। (व्यवधान) सिखाएंगे, नवोदय विद्यालय में भी वह सिखाएंगे।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : इन पांच वर्षों में रुपए के मूल्य में कितनी गिरावट आई है?

श्री राजीव गांधी : मुझे दुबारा स्पष्ट करने दें। वर्ष 1980-81 में सरकारी क्षेत्र में 21,000 करोड़ रुपए लगाए गए। वर्ष 1984 और 1987 के बीच हमने 36,000 करोड़ रुपये लगाए···

श्री बसुदेव आचार्य : वास्तविक रूप में बताइए?

श्री राजीव गांधी : यह तुलना दो वर्षों की है। सरकारी क्षेत्र के लिए हम घड़ियालू आंसू नहीं बहाते क्योंकि यह सरकारी क्षेत्र, जो कार्य कुशल नहीं है, जो देश के लोगों को शक्तिहीन बनाता है, ऐसा सरकारी क्षेत्र नहीं है जैसाकि हम चाहते हैं। हम ऐसा सरकारी क्षेत्र चाहते हैं जो देश के लोगों के लिए हो···

श्री बसुदेव आचार्य : यह वसन्त साठे का सिद्धान्त है।

ऊर्जा मन्त्री (श्री बसन्त साठे) : यह लोगों का मत है।

श्री राजीव गांधी : कोई भी व्यक्ति जो सरकारी क्षेत्र की उत्पादकता और सक्षमता को सीमित करने का प्रयास करता है, यह व्यक्ति सरकारी क्षेत्र को उन्नति के लिए नहीं अपितु सरकारी क्षेत्र को हमेशा के लिए खतम करने की बात करता है, वह सरकारी क्षेत्र का दुश्मन है। सरकारी क्षेत्र का बना रहना···

श्री नारायण चौबे : परन्तु एन० पी० सी० सी० में आपके इसके बिल्कुल विपरीत किया है··· (व्यवधान)

श्री सैफुद्दीन चौधरी : आपके पास और कितने पृष्ठ हैं ?

श्री राजीव गांधी : आपके पास कहने को कुछ नहीं है। मेरे पास कहने को बहुत कुछ है। इसलिए यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं क्योंकि हमने तीन वर्षों में इतने अधिक कार्य किए हैं जो मैं आपको बताना चाहता हूं और जिसकी आप अपेक्षा कर रहे हैं (व्यवधान)

[हिन्दी]

अरे बैठ जाओ। अब बाद में बोलना। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चौबे जी को तो सफेद बालों की भी शर्म नहीं है। (व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : इन तीन वर्षों में योजना का कार्यान्वयन किसी भी अन्य योजना के तीन वर्षों के कार्यान्वयन से अधिक है। इस वर्ष योजना में अनेक नई परियोजनाएं शुरू की हैं। सरकारी क्षेत्रों के लिए हमने अपना वादा पूरा कर दिया है और उसमें कोई कमी नहीं रही। सरकारी क्षेत्र हमारी आयोजना का मुख्य सिद्धान्त है। और हम इसमें परिवर्तन नहीं कर रहे। हमने सरकारी क्षेत्र को अपनी अर्थव्यवस्था की अत्यधिक चरमसीमा पर बनाए रखा है और इसे यहीं स्थिर बनाए रखना है है और यही एक उपाय है।

श्री बसुदेव आचार्य : गैर-सरकारी क्षेत्र का क्या हुआ ? गैर-सरकारी क्षेत्र में कितना पूंजी-निवेश किया गया है ?

श्री राजीव गांधी : यदि सरकारी क्षेत्र के पूंजी निवेश को दुगना किया जाता है तो हमें गैर-सरकारी क्षेत्र के पूंजीनिवेश को भी दुगना करना पड़ेगा। हम इसे रोकना नहीं चाहते। गैर-सरकारी क्षेत्र में हम पूंजीनिवेश नहीं करते। सरकारी क्षेत्र में सरकार द्वारा पूंजीनिवेश किया जाता है।

श्री बसुदेव आचार्य : यह आपका समाजवाद है।

श्री सैफुद्दीन चौधरी : पहली बार गैर-सरकारी क्षेत्र में अधिक पूंजी-निवेश किया गया है। (व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : बोलो मत, बोलो मत। आप कृपा करिए और बैठ जाइए। आप किसी के गला घोंटना चाहते हैं, क्यों ऐसा करते हैं ?

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : पूर्वी राज्यों में पहली बार कृषि के क्षेत्र में हरित क्रान्ति आई है हम विशेष रूप से छोटे और सीमा तक किसानों का उत्पादन बढ़ाना चाहते हैं। हमने समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम और अन्य आय तथा रोजगार—उत्पत्ति कार्यक्रमों के माध्यम से इन लोगों की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया है।

अन्त में मैं भ्रष्टाचार के प्रश्न पर आता हूं। किसी भी सरकार ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए इतने प्रयास नहीं किए जितने कि हमारी सरकार ने किए हैं।

श्री बसुदेव आचार्य : आपने भ्रष्टाचार को छुपाने के लिए बहुत कुछ किया है।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए, इसके बाद आप टिप्पणी कर सकते हैं। महोदय, इस सभा में फेयरफैक्स का मामला उठाया गया था। मैंने पहले ही इस पर टिप्पणी कर दी है। आयोग ने हमारी स्थिति पूरी तरह से निर्दोष सिद्ध कर दी है और इस प्रतिवेदन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विपक्ष उद्योगपतियों के एक समूह के साथ मिल कर लाभ उठाने का प्रयास कर रहा था। क्या यह भ्रष्टाचार नहीं है ?

श्री बसुदेव आचार्य : विपक्ष ?

श्री राजीव गांधी : जी हां, विपक्ष। विपक्ष ने मामले को समझे बिना या मामले का अध्ययन करने की परवाह किए बिना मामला उठाया था। यदि आपने इसकी जांच करने की परवाह की होती, तो हमें इसका उत्तर देने के लिए आयोग को नहीं सौंपना पड़ता। उसमें उत्तर था।

श्री बसुदेव आचार्य : आप इसे दूसरी दिशा में ले गए।

श्री राजीव गांधी : हम सत्य का पता लगाने के लिए इसे दूसरी दिशा में ले गए। निःसन्देह, इसे सत्य की ओर मोड़ा गया था। यह निपट झूठ की ओर जा रहा था। (व्यवधान) मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस सभा में जो भी मामला उठाया गया है सरकार हर मामले में निर्दोष सिद्ध होगी। मुझे पता है कि सरकार ने कोई गलत काम नहीं किया है। सरकार उसमें किसी भी तरह से लिप्त नहीं है। (व्यवधान) संयुक्त संसदीय समिति का गठन करके हमने सत्य के प्रति वचनबद्धता का प्रदर्शन किया। वह सत्य के प्रति बचनबद्धता थी। जो लोग सत्य जानना चाहते थे, वे संयुक्त संसदीय समिति के सदस्य बने। जो सत्य से डरते थे, वे दूर रहे।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : जो सत्य को छिपाना चाहते थे, वे संयुक्त संसदीय समिति के सदस्य बने।

श्री राजीव गांधी : मैंने भ्रष्टाचार पर अपनी बात समाप्त नहीं की है। महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि हर उस मुद्दे पर जिसमें अनाचरण या कमीशन या भ्रष्टाचार का उल्लेख किया गया, सरकार ने कार्यवाही की। जब लोक लेखा समिति ने, मेरे विचार से शुद्धि के अध्यधीन, मेरे एक मन्त्री के विरुद्ध रिपोर्ट दी मैंने उसी दिन उससे त्याग पत्र ले लिया। जब दो राज्यों में मेरे मुख्यमंत्रियों के बारे में प्रश्न उठा, तो मैंने उनसे त्याग-पत्र ले लिया। क्या भ्रष्टाचार के आरोपी किसी विपक्षी मुख्य मन्त्री ने त्याग पत्र दिया ? (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : आंध्र प्रदेश मे क्या हो रहा है ? कर्नाटक में क्या हो रहा है ? बंगाल में क्या हो रहा है।

श्री एम० रघुमा रेड्डी (नलगोंडा) : आप पहले त्याग-पत्र दीजिए।** (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठ जाइए। कुछ भी रिकार्ड नहीं होगा।

(व्यवधान)

**कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री राजीव गांधी : एक मिनट के लिए बैठ जाइए। मुझे अपनी बात कहने दीजिए। आप जो पूछेंगे, मैं हर बात का उत्तर दूंगा। इस मामले में हम बहुत स्पष्ट हैं। (**व्यवधान**) आज कांग्रेस का कोई मुख्य मन्त्री ऐसा नहीं है जिसे उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय ने दोषी करार दिया हो। ऐसे विपक्षी मुख्य मन्त्री हैं जिन्हें दोषी करार दिया हो।

(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : आप भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं, क्या आपने उच्च न्यायालय का निर्णय पढ़ा है ?

श्री वसुदेव आचार्य : आपने उड़ीसा के अपने मुख्य मन्त्री के विरुद्ध क्या कार्यवाही की है ? (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : किसी को अनुमति नहीं है।

(**व्यवधान**)**

श्री राजीव गांधी : मुझे दोहराने दीजिए। कांग्रेस के किसी भी मुख्यमंत्री के विरुद्ध उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय का कोई निर्णय नहीं है। यह दो विपक्षी मुख्य मंत्रियों के विरुद्ध है और वे अभी भी सत्ता में हैं। उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए···(**व्यवधान**)···परिवर्तन के लिए विपक्ष की ओर से स्वच्छ राजनीतिक जीवन की वचनबद्धता पूरी होनी चाहिए। आपको भी इस पर अमल करना चाहिए, न कि केवल भ्रष्टाचार की बात ही करनी चाहिए। हमने अमल किया है···(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवस्था बनाए रखें। कृपया बैठ जाइए।

श्री एस० जयपाल रेड्डी : हम जनता के निर्णय के लिए तैयार हैं। क्या आप तैयार हैं ?

श्री राजीव गांधी : उच्च न्यायालय के निर्णय से बचने के कई तरीके हैं। (**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : मैंने ऐसा कहा है, मैं उसे फिर से कह रहा हूं। उच्च न्यायालय ने स्थगनादेश दे दिए हैं।

मुझे अपना भाषण समाप्त करने दीजिए। आज हमें देश में एक सशक्त विपक्ष की आवश्यकता है, परन्तु ऐसा विपक्ष जो अपनी हठधर्मिता से न बांधा हो। वे इकट्ठे कब होंगे ? वे बेहतर और अधिक सम्पन्न भारत के लिए कब एकजुट होकर काम करेंगे ?

महोदय, मैं एक मुद्दा नहीं उठा सका·· मैं कहना चाहता हूं। मुझे खेद है। मैंने अभी-अभी उन्नीकृष्णन जी को देखा, उन्होंने मुझे याद दिला दिया। कल एक माननीय सदस्य ने कहा था कि यह विपक्ष इंगलैंड के विपक्ष जैसा वफादार नहीं है। मुझे इस मुहावरे को समझने दीजिए। इंगलैंड में महारानी की सरकार है और वहां महारानी का वफादार विपक्ष है। वफादारी देश के प्रति है, वफादारी किसी व्यक्ति के प्रति नहीं है। महोदय, इंगलैंड में···(**व्यवधान**) कृपया, उन्नीकृष्णन जी, यदि आप कृपा करके मेरी बात सुनें, तो आप मेरी बात समझेंगे, जो मैं कहने का प्रयास कर रहा हूं।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन : यदि मुझे आपसे सुनना पड़े तो यह सीखने लायक बात नहीं है।

**कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री राजीव गांधी : दुर्भाग्यवश, मैंने बहुत समय पहले से ऐसा करना छोड़ दिया है।

इंगलैंड में, महारानी की सरकार है और वहां महारानी का वफादार विपक्ष है अर्थात् विपक्ष देश के प्रति वफादार है। कल एक माननीय सदस्य ने कहा था कि यह वफादार विपक्ष नहीं है। संभवत: किसी अन्य अवसर पर वे यह सत्यापित करेंगे कि वे किसके प्रति वफादार नहीं है। क्या वह देश के प्रति वफादार नहीं हैं। कभी-कभी मैं ऐसा सोचता हूं।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन : यदि आप मेरी बात समझने में समर्थ नहीं हैं, तो मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता हूं···(**व्यवधान**)

श्री राजीव गांधी : उन्नीकृष्णन जी, अच्छा हो आप जल्दी से स्पष्ट कर दें।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन : मैं संसदीय लोकतंत्र की धारणा का राजतंत्र सहित और राजतंत्र रहित उल्लेख कर रहा था। आप स्वयं को राजा समझ रहे हैं।

श्री राजीव गांधी : मैं माननीय सदस्य से इस बात का इसी सत्र में स्पष्टीकरण देने का अनुरोध करता हूं क्योंकि अगले सत्र में शायद वे यहां न हों।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन : मैं यह कल करने को तैयार हूं।

श्री राजीव गांधी : मैं सभा पर छोड़ता हूं और अनुरोध करता हूं कि इस प्रस्ताव को रद्द किया जाए।

[**हिन्दी**]

श्री सी० माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : अध्यक्ष महोदय, अब मेरी बारी होगी कि इन लोगों को आईना दिखाऊं।

(**व्यवधान**)

[**अनुवाद**]

मैं शुरू में यह कहता हूं कि हम विपक्षी दल राष्ट्रपति के प्रति वफादार हैं। (**व्यवधान**)

प्रधानमंत्री जी, पहले आप सुनिए।

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : आप या तो सभा छोड़कर चले जाइए अथवा आराम से बैठ जाइए। यह ठीक तरीका नहीं है कि आप यहां वहां खड़े होकर बोलें।

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : शान्ति ! शान्ति बनाए रखें।

श्री सी० माधव रेड्डी : अध्यक्ष महोदय, मैंने कहा है कि हम विपक्षी दल राष्ट्रपति के प्रति वफादार हैं। कृपया इसे समझें। हम महामहिम के प्रति वफादार नहीं हैं। हम राष्ट्रपति के प्रति वफादार हैं। हम राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हैं। (**व्यवधान**)